विशद जिन अर्चा

तीन लोक

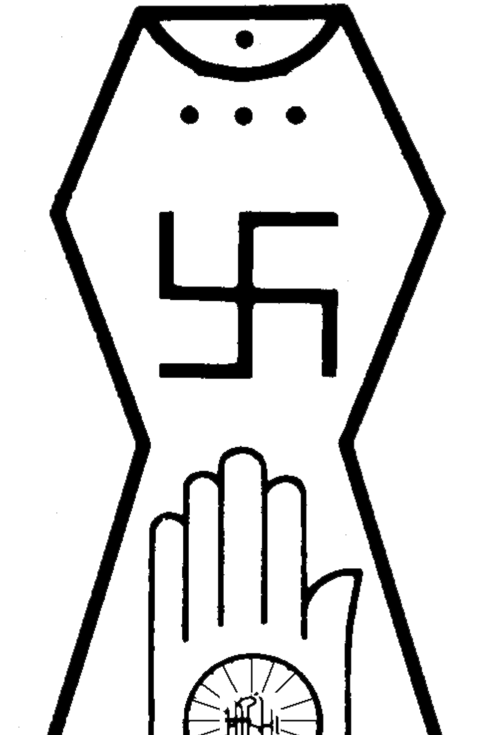

रचयिता

प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति : **विशद जिन अर्चा**
कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : द्वितीय, 2026
प्रतियाँ : 1000
संकलन : स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोग : मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,
मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी : आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. जय अरिहंत ट्रेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971
5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक :

शिखरचंद जैन बाकलीवाल
डिमापुर (नागालेंड)
मो.: 9436004227

कृति : **विशद जिन अर्चा**
कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : द्वितीय, 2026, प्रतियाँ : 1000
संकलन : स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोग : मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,
मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी : आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. जय अरिहंत ट्रेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971
5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक :

1. स्व. पं. दयाचंद्र शास्त्री, पं. महेशचंद्र, डॉ. श्रीमती निशा जैन, कु. अनुभा, कु. गरिमा जैन, पन्ना, मो.: 9424671612
2. श्री व्रतेशचंद जैन, श्रीमती राजुल जैन, पुत्र वीरेश, अमिताभ, विकास, रश्मी, आकांक्षा, रिचा, अवनी, वीनू, अंश, अतिशय, इच्छा, देशना।
3. विकास जैन पिता व्रतेशचंद जैन, स्व.शालिनी जैन, पत्नी रिचा जैन, पुत्री देशना, अनायरा जैन, नागपुर (महा.)
4. श्री वीरचंद, सुनील कुमार, संदीप कुमार, सक्षम कुमार, आराधना, श्रीमती मनीषा, सेजल, शचि, साक्षी, माही जैन, पन्ना।
5. श्रीमती मणि जैन, रोहित, अर्चना, अमित, प्रज्ञा, रिजिम, साक्षी, आर्यन, पार्थ।
6. श्रीपाल जैन, श्रीमती लक्ष्मी जैन, संजय-प्रीति, सजीव-सुनीता, सुजीत-वर्षा, आदित्य, आयुषी, आरुषि, आध्या, अनुसि, अरिहंत।
7. राजेन्द्र कुमार, श्रीमती किरण, सुषाषचन्द्र।
8. श्रीमती किरण जैन, विवेक, रुचि, राहुल, नीलू, रिचा, निक्की, मेघा, विहान, सम्यक, आर्या, अरिहंत, विवान, निवि, जी-9 परिवार, पन्ना।
9. श्री कैलाशचन्द जैन, सारिका जैन, प्रक्षाल, प्रखर, धैर्य, शिक्षक पन्ना। मो.: 9753471352

अनुक्रमणिका

1.	आदिनाथ स्तोत्र	04
2.	पद्मप्रभु स्तोत्र	05
3.	चन्द्रप्रभु स्तोत्र	06
4.	शांतिनाथ स्तोत्र	07
5.	शांतिनाथ स्तवन	08
6.	शांतिनाथ जिनार्चना	09
7.	पंचपरमेष्ठी रक्षा स्तोत्र	16
8.	शांतिनाथ की आरती	17—18
9.	मुनिसुव्रतनाथ स्तवन	19
10.	मुनिसुव्रतनाथ स्तोत्र	21
11.	मुनिसुव्रतनाथ जिनार्चना	22
12.	पार्श्वनाथ की आरती	32
13.	मुनिसुव्रतनाथ की आरती	33
14.	नेमिनाथ स्तोत्र	34
15.	नेमिनाथ जिनार्चना	35
16.	नेमिनाथ की आरती	46
17.	पारसनाथ स्तोत्र	47
18.	पारसनाथ जिनार्चना	48
19.	श्री पार्श्व गुणगान	58
20.	श्री महावीर स्तोत्र	59
21.	श्री महावीर गुणानुवाद	60
22.	श्री महावीर स्वामी जिनार्चना	61
23.	चौबीस तीर्थंकर के चिन्ह	73
24.	वीर स्तवन	74
25.	महावीर भगवान की आरती	76
26.	सिद्ध आराधना	77
27.	नवदेव जिनार्चना	82
28.	सप्त तत्त्व भावना	86
29.	षट् आवश्यक भावना	91
30.	गुरुवर की स्तुति	95
31.	आचार्य श्री विशदसागर जी महामुनिराज की आरती	96

।। श्री आदिनाथ स्तोत्र ।।

तर्ज – नरेन्द्रं सुरेन्द्रं फणीन्द्रं मुनिन्द्रं ....

नरेन्द्रं सुरेन्द्रादि पूजें शतेन्द्रं, त्रिलोकाधिपति हे आदि जिनेन्द्रं!
छवि वीतरागी है त्यागी जिनेशं, चरण पूजते सर्व प्राणी अशेषं।।1।।

सभी आपदाओं से जग को बचाते, सभी संकटों को प्रभु तुम हटाते।
हे मुक्ती के राही! सुमुक्ती प्रदाता, त्रिलोकी पति हे! जगज्जन के त्राता।।2।।

किए तेरी भक्ति सभी रोग जावें, कभी भूत प्रेतादि उन्हें न सतावें।
बढ़े भक्ति से शक्ति मिले भव किनारा, मेरे आप रक्षक हो दीजे सहारा।।3।।

है मिथ्या तिमिर में न सूझे किनारा, न भक्ति बिना है हमें कोई चारा।
तेरी भक्ति से शान्ति तन मन में आए, तेरी भक्ति जग जन को शांति दिलाए।।4।।

जले क्रोध अग्नी क्षमा नीर डालो, मुझे मान के बीच से प्रभु निकालो।
है माया की छाया करो दूर स्वामी, हरो लोभ मेरा बनूँ मोक्षगामी।।5।।

तुम्ही माँ पिता हो प्रभू मित्र मेरे, स्वजन बन्धु तुम ही शरण आए तेरे।
प्रभू तुमने जग को दिया है सहारा, हमे तुमने हे नाथ! फिर क्यों विसारा।।6।।

दुखी दीन जीवों के हो दुःख हर्त्ता, सदा सज्जनों को प्रभू सौख्य कर्त्ता।
महामोह तम को प्रभू ज्ञान भानं, हो सम्यक्त्व के आप हेतु प्रधानं।।7।।

किए भक्ति प्रभु की बढ़े पुण्य भारी, किए ध्यान हो जीव मोक्षाधिकारी।
किए सेव प्रभु की सभी पाप जावें, सभी संकटों से प्रभु जी बचावें।।8।।

'विशद' श्रद्धा के पुष्प पद में चढ़ाएँ, बनें भक्त जब तक कि मुक्ती न पाएें।
करो नाथ! रक्षा हमें दो सहारा, करो पार भव से ज्यों औरों को तारा।।9।।

''दोहा''

सुर नर मुनि न कर सके, प्रभु जी का गुणगान।
''विशद'' भक्त को हे प्रभो!, कर दो स्वयं समान।।

।। श्री पदम प्रभ स्तोत्र ।।

(तर्ज - नरेन्द्रं सुरेन्द्रं शतेन्द्रं अधीशं.......

नरेन्द्रं सुरेन्द्रं गजेन्द्रं ऋषीषं, महेन्द्रं गणेन्द्रादि पूजें यतीशं।
श्री पद्मप्रभ देव पूजें महीषं, नमो देव देवं यजें पाद ऋषीषं।।
शतेन्द्रं फणेन्द्रं गणेन्द्रं मुनीशं, विशद ज्ञानधारी सु पूजे सुधीषं।
कभी भूत प्रेतादि कोई सतावें, महारोग शोकादि से जो बचावें।।1।।
कोई नागिनी शाकिनी जो सतावें, ग्रहादि से रक्षा प्रभूजी करावें।
विषम व्याधि से दुःख प्राणी जो हारें, महासंकटों से सभी को उबारें।।
सुनी हमने महिमा पदमप्रभ की भाई, अतः आपकी हम शरण आज पाई।
चरण की शरण में कोई जीव आते, विशद भक्ति करके सदा सौख्य पाते।।2।।
कोई रोग व्यन्तर की बाधा सताए, चरण आपके आते ही भाग जाए।
ग्रहारिष्ट रवि के रहे आप नाशी, त्रिलोकाधिपति हे त्रिलोक प्रकाशी!।।
जगज्जीव आके प्रभो! दर्श पाते, चरणों में आकर जो माथा झुकाते।
प्रभु के प्रति जो भी श्रद्धा जगावें, वे मिथ्या तिमिर शीघ्र अपना नशावें।।3।।
करें भक्त पूजा जो भक्ती जगावें, वे मुक्ती प्रदायी सहज पुण्य पावें।
प्रभु देशना देते जग को निराली, महामोहतम को रही हरने वाली।।
चलें राह पर जो प्रभु के सहारे, लगे शीघ्र नैय्या तो भव के किनारे।
जगज्जन को तुमने दिया है सहारा, नहीं आपके बिन है कोई हमारा।।4।।
हमें दुख सताते तो तुमको ही ध्याते, सभी संकटों से प्रभु तुम बचाते।
सती सीता को अग्नि पे जो बिठाया, प्रभो! आपने नीर शीतल बनाया।।
सती अंजना ने प्रभू तुमको ध्याया, महासंकटों से तुम्ही ने बचाया।
सती द्रोपदी ने तुम्हे नाथ! ध्याया, प्रभु चीर आकर के तुमने बढ़ाया।।5।।
सुदर्शन को शूली पे नृप ने चढ़ाया, शूली का सिंहासन तुमने बनाया।
धनंजय के सुत को डशा नाग स्वामी, बचाए उन्हे आप हे अन्तर्यामी!।।
प्रभो! आपको जिसने श्रद्धा से ध्याया, मनोवांछ फल श्रेष्ठ उसने ही पाया
प्रभो! आपकी हम भी सुनकर के माया, त्रियोगों से हमने तुम्हे आज ध्याया।।6।।
खड़े आपके द्वार आशा लगाए, कोई भी असाता न जीवन में आए।
सदा शांती सौभाग्य जीवन में आए, कोई दुःख बाधा न हमको सताए।।
प्रभु हो कृपालू हरो कष्ट सारे, मेरे नाथ! जीवन के हो तुम सहारे।
सुनो अर्ज मेरी करो पार नैय्या, करो पार भव से प्रभो! जग खिवैया ।।7।।

दोहा - सुरनर मुनि गणधर करें, श्री जिन का यशगान।
'विशद' शांति सौभाग्य हो, पाएँ पद निर्वाण।।

।। श्री चन्द्रप्रभ स्तोत्र ।।

(तर्ज - नरेन्द्रं फणेन्द्रं सुरेन्द्र ....

गणेन्द्रं सुरेन्द्रादि पूजे महीषं, शतेन्द्रं गणेन्द्रादि पूजे ऋशीषं ।
नगेन्द्रं मृगेन्द्रं सदा जोड़ हाथं, त्रियोगेन पूज्यं श्री चन्द्रनाथं।।1।
प्रभो! सुन के महिमा शरण आज आए, खड़े आपके द्वार माथा झुकाए।
करें भक्ति प्रभु की जो होके श्रद्धानी, बनें जीव वे लोक में सर्व ज्ञानी।।2।।
पढ़ें मंगलाष्टक जो मंगल कराएँ, जो आगत सभी विघ्न जग के नशाएँ।
जो करके जिनाभिषेक महिमा को गाएँ, करें शांतिधारा जो शांती को पाएँ।।3।।
करें आरती भारती के सहारे, नशें विघ्न उनके अनागत के सारे।
है महिमा प्रभू की जगत में निराली, कभी भक्ति जाए न प्रभु जी की खाली।।4।।
बनें श्रेष्ठ श्रावक जो पूजा रचाएँ, त्रियोगों से श्री जिन की जयमाल गाएँ।
करें शांति एवं विसर्जन कराऐं, सदा आशिका निज के माथे चढ़ाएँ।।5।।
जो जाके जिनालय में जिन दर्श पाएँ, लगा के परिक्रमा ले अर्घ्य चढ़ाएँ।।
करें तीन आवर्त्त सिर को झुकाएँ, जो बोलें नमोस्तु हृदय हर्ष पाएँ।।6।।
सु कविराज जग में धनंजय कहाए, श्री जिन की पूजा का फल श्रेष्ठ पाए।
कभी सेठ सुत को डसा नाग कारा, जहर पुत्र का तब प्रभू तुम उतारा।।7।
सुदर्शन को शूली पे नृप ने चढ़ाया, तो शूली का सिंहासन तुमने बनाया।
महासंकटों में प्रभू को जो ध्याएँ, सभी संकटों से प्रभू जी बचाएँ।।8।।
दुखी दीन जीवों के दुःख जो नशावें, सभी आपदाएँ किए भक्ति जावें।
कोई भूत प्रेतादि बाधा सताए, प्रभू भक्ति से मुक्ति बाधा से पाए।।9।।
समन्तभद्र को भष्म व्याधी सताई, किए ध्यान प्रभु का नशी व्याधि भाई।
कहा भूप शिव पिण्डी को सिर झुकाए, नमन मेरा पिण्डी नहीं झेल पाए।।10।।
श्री चन्द्रप्रभ स्तवन प्रभु रचाए, फटी पिण्डी से चन्द्र जिन दर्श पाए।
श्री चन्द्र जिनकी किए जय जयकारे, कई जीव जिन धर्म खुश हो के धारे।।11।।
चमत्कार प्रभु जी के हैं कई निराले, जग जन के मन को हैं जो हरने वाले ।
प्रभू स्वप्न देके तिजारा में प्रकटे, दुखी दीन जीवों के दुख मेघ विघटे।।12।।
सभी भूत प्रेतादि बाधा नशाएँ, शरणार्थी जीवों के दुख जो मिटाएँ।
प्रभो! सुनके महिमा शरण आज आए, खड़े आपके द्वार माथा झुकाए।।13।।
सुनो अर्ज मेरी करो पार नैय्या, करो पार भव से विभो जग खिवैय्या।
नमन है नमन है नमन जिन हमारे, 'विशद' भाव से हम करें जय जयकारे।।14।।

दोहा- भक्त आपके द्वार पर, भक्ती करे त्रिकाल ।
सुख शांती सौभाग्यमय, जीवन होय विशाल ।।
भक्त चरण में आपके, भक्ती करते नाथ!।
भव सिन्धू के पार में, हमको भी दो साथ।।

।। श्री शांतिनाथ स्तोत्र ।।

(तर्ज – नरेन्द्र शतेन्द्रं सु पूजे.....)

नरेन्द्र फणेन्द्रादि ध्यायें शतेन्द्रं, महिमा गणेन्द्रादि गाएँ महेन्द्रं।
श्री शांति जिन को जो शांति से ध्याएँ, प्राणी विशद सौख्य शांती वे पाएँ।।
छवि वीतरागी है सर्वस्य त्यागी, मनोहारी मुद्रा परम वीतरागी।
प्रभु को दुखी दुःख में जो भी ध्याएँ, अति शीघ्र मुक्ती दुखों से वे पाएँ।।1।।

हम भटके जगत में प्रभु बे सहारा, है अज्ञान का तम न सूझे किनारा।
नहीं जान पाए प्रभु तेरी माया, अतः जग में भटके नहीं पार पाया।।
फँसे राग में द्वेष ने भी सताया, सतत मोह ने जाल में जो फँसाया।
जले क्रोध अग्नी में समता न पाये, शिला मान की हम नहीं तोड़ पाए।।2।।

किए भक्ति प्रभु की सभी रोग जाएँ, नहीं भूत प्रेतादि बाधा सताएँ।
त्रिलोकी पति सब दुखों से बचाते, सभी संकटों को प्रभु जी हटाते।।
प्रभो! भक्ति कर शक्ति निज की जगाएँ, बढ़े पुण्य सारी टलें आपदाएँ।
विशद मंत्र है नाम प्रभु जी तुम्हारा, बने जिन्दगी में हमारे सहारा।।3।।

सभी मंगलों में हो मंगल जिनेशं, सभी उत्तमों में हो उत्तम विशेषं।
हैं अशरण शरण जिन प्रभु जी हमारे, प्रभू लोक में हो तुम चंदा सितारे।।
तुम्ही तात माता पिता हो हमारे, तुम्ही मित्र भ्राता हो जीवन सहारे।
जो श्रद्धा के फूलों से जिनवर को ध्याएँ, महा सम्पदा के वे स्वामी कहाएँ।।4।।

दोहा

'विशद' शांति के कोष जिन, परं शांति दातार।
चरण पड़े हम आपके, बोलें जय जयकार।।

।। श्री शांतिनाथ स्तवन ।।

तर्ज – बाहुबली भगवान का मस्तकाभिषेक ....

श्री शांतिनाथ जिनराज शुभ, शांती के हैं धाम।
धन्य धन्य वे भक्त यहाँ जो, करते विशद प्रणाम ।।टेक।।
शांती की है चाह सभी को, नर पशु हों या देव।
करते हैं पुरुषार्थ जगत जन, पाने शांति सदैव ।।
शांत भाव बिन शांति मिले ना – 2
निज में धर्म का फूल खिले ना – 2
धर्म के फल से सुख शांती हो, मिलता है आराम, शांतिनाथ 1

शांतिनाथ जिन शांति प्रदायक, पूजे यह संसार।
तीन लोक के प्राणी करते, जिनकी जय-जयकार।।
संकट बाधा कुछ भी आए-2 ।।
किन्तू धर्म को नहीं भुलाए – 2 ।।
भक्ती के फल से जीवन यह, होय श्रेष्ठ अभिराम, शांतिनाथ 2

कामदेव चक्री पद पाए, बने आप तीर्थेश।
तीन पदों के धारी अनुपम, जग में हुए विशेष ।।
कर्मों का हो जाता है क्षय – 2 ।
सुपद प्राप्त होता मृत्युंजय – 2 ।।
जिनवर की भक्ति कर मिलता, जीवन में आराम।
शांतिनाथ जिनराज शुभ, शांती के हैं धाम ।।

धन्य-धन्य वे भक्त यहाँ जो, करते 'विशद' प्रणाम।
शांतिनाथ शुभनाम, है प्यारा प्यारा नाम ।।3।।

।। श्री शांतिनाथ जिनार्चना।।

दोहा- शांती के हैं कोष जो, परम शांति दातार।
शांतिनाथ पद वन्दना, करते बारम्बार।।
(हे स्वामी नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु)

मंगलाचरण

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।

ज्ञानोदय छन्द

तीन लोक में पूज्य कहे हैं, अर्हत् सिद्धाचार्य महान।
उपाध्याय साधू परमेष्ठी, शिवपथ गामी महिमावान।।
जिनकी चरण वन्दना करते, परम शांति पाने शुभकार।
शांतिनाथ की महिमा गाते, तीन योग से बारम्बार।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं प्रातः स्मरणीय रोग शोक निवारक परमशांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्जवलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल-2

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
सुर नर विद्याधर से पूजित, आप हुए अन्तर्यामी।
मंगलमय मंगलकारी प्रभु, जगती पति हे शिवगामी!।।
णमोकार में प्रथम आपका, भव्य जीव जपते हैं नाम।
तीर्थंकर पदवी के धारी, मेरा बारम्बार प्रणाम।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगलकारी मंगलप्रदायक परम शांतिदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तमोत्तम-3

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
उत्तम गति से आने वाले, उत्तम पदवी के धारी।
उत्तम गुण में लीन हुए प्रभु, होकर के तुम अविकारी।।
लोकोत्तम कहलाए हे प्रभु!, पाए सहस आठ लक्षण।
देवेन्द्रों से पूज्य आपको, वन्दन है मेरा क्षण क्षण।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर चक्रवर्ती कामदेव आदि उत्तम पद धारक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शरणभूत - 4

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
कर्म घातिया के नाशी प्रभु, नाश किए हो जन्म मरण।
गंधकुटी पर आप शोभते, अर्हत् जग में एक शरण।।
दिव्य देशना मोक्ष प्रदायी, खिरे आपकी मंगलकार।
शरणभूत हो आप लोक में, वन्दन तव पद बारम्बार।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तम शरणभूत परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ कल्याणक -5

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भावें जीव।
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक, मोक्ष मार्ग की धरते नीव।।
गर्भ कल्याणक के अवसर पर, दिव्य रत्न बरसाते इन्द्र।
अष्ट देवियाँ माँ की सेवा, खुश होकर के करें सदैव।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त सर्व शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म कल्याणक - 6

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
इन्द्रराज ऐरावत लेकर, जन्मोत्सव पर आता हैं।
पाण्डुक शिला पे मेरुगिरि की, बालक को ले जाता है।।
सहस्त्र आठ कलशों के द्वारा, प्रभु का न्हवन कराता है।
भक्ति भाव से खुश होकर के, जय जयकार लगाता है।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं जन्म कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः। चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक -7

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक, कोई निमित्त जब पाते हैं।
यह संसार असार जानकर, मन वैराग्य जगाते हैं।।

तप कल्याणक पाने वाले, संयम को अपनाते हैं।
होकर के निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, निज आतम को ध्याते हैं।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान कल्याणक - 8

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
ज्ञानावरणादिक कर्मों का, आत्म ध्यान कर करें विनाश।
लोकालोक प्रकाशी अनुपम, करते केवल ज्ञान प्रकाश।।
दिव्य देशना देकर प्रभुजी, जगजन का करते कल्याण।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, तीन योग से महति महान।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक - 9

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
योग रोध करके जिन स्वामी, करते सारे कर्म विनाश।
इस संसार वास को तजकर, करते सिद्ध शिला पर वास।।
सुख अनन्त में रमण करें जो, सिद्ध अनन्तानंत महान।।
जिनकी अर्चा करने वाले, पावें पावन शिव सोपान।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मातिशय - 10

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
अतिशय रूप सुगन्धित देही, मलमूत्रादिक रहित निहार।
रहित पसेव अमित शक्ती युत, समचतुष्क तन का आकार।।
प्रिय हित वचन सहस लक्षण युत, श्वेत रक्त तन का शुभकार।
वज्र वृषभ नाराज संहनन, सहित प्रभु हों मंगलकार।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय गुण युत सर्वशांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानातिशय -11

शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।11।।
सौ योजन तक हो सुभिक्षता, गगन गमन दर्शन चहुँ ओर।
अदया भाव उपसर्ग रहित हों, करते मन को भाव विभोर।।
छाया अक्षस्पंद रहित हों, केश और नख रहें समान।
सब विद्या के ईश्वर हों प्रभु, दश अतिशय पाते भगवान।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञनातिशय युत, परमं शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

देवोपनीतातिशय -12

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
अर्ध मागधी भाषा मैत्री, गगन गमन होवे शुभकार।
सर्व ऋतु फल भू दर्पणवत्, सर्वानन्द नभ में जयकार।।

पगतल कमल सुगंधित वायू, वृष्टी करते मेघ कुमार।
वायु कुमारोपशमित धूल हो, देवोंकृत अतिशय शुभकार।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशय युत् परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य – 13

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
तरु अशोक भामण्डल चामर, देव दुन्दुभि सिंहासन।
दिव्य ध्वनि क्षत्रत्रय सिर पे, पुष्प वृष्टि होवे पावन।।
केवल ज्ञान प्राप्त होते प्रभु, प्रातिहार्य से हों संयुक्त।
सुर नर मुनि सब अर्चा करते, मोह से होकर पूर्ण विमुक्त।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य युत परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट मंगल द्रव्य – 14

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
कलश ध्वजा दर्पण छत्रत्रय, स्वस्तिक चौंसठ चँवर महान।
ठोना पंखा झारी आदिक, अष्ट द्रव्य मंगलमय जान।।
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, समवशरण रचते हैं देव।
प्रभु के सेवक बनकर आते, इन्द्रादिक सौ भक्त सदैव।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय सहित परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय - 15

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
ज्ञानावरण कर्म क्षय करके, प्रगटाएँ प्रभु ज्ञान अनन्त।
दर्श अनन्त प्राप्त कर लेते, करके दर्शावरणी अन्त।।
मोह कर्म क्षयकर सुख पावें, परम पूज्य अर्हत् भगवान।
कर्मान्तरायक्षय करके होते, प्रभु अनन्त चतुष्टयवान।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय युत् परम शांतिप्रदायक श्री शंतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अठारह दोष - 16

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।
क्षुधा तृषा विस्मय मद मृत्यु, जन्म जरा निद्रा भय खेद।
रोग शोक हो अरति मोह अरु, राग द्वेष हो चिन्ता स्वेद।।
दोष अठारह का हो जाता, अर्हन्तों के पूर्ण विनाश।
विशद ज्ञान को पाने वाले, करते केवल ज्ञान प्रकाश।।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित परम शांतिप्रदायक श्री शंतिनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

शांतिनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय बोलो श्री जिनवर की, शांतिनाथ तीर्थंकर की।।

पूज्य सोलहवें तीर्थंकर हैं, जिनवर शांतिनाथ भगवान।
पावन सोलह दीपों द्वारा, करते हम प्रभु का यशगान।।
''विशद'' भाव से महिमा गाते, पाने को हम शिव सोपान।
भव्य जीव जिनअर्चा करके, करते निज आतम कल्याण।
शांतिनाथ के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकातें हैं।
दीप धूप शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, भाव से महिमा गाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं त्रय पद धारी षोड्स तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय नमः चरणाभ्यां सर्व षोड्स प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/पूर्णार्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

हे भगवन! नमोस्तू नमोस्तू-नमोस्तू

।। पंचपरमेष्ठी रक्षा स्तोत्र ।।

परमेष्ठी परमपूज्यं, सर्व पाप क्षयंकरः।
आत्म रक्षा हेतु मंत्रं, वज्र कवच धारणं।।1।।
ॐ णमो अरहंताणं, शीर्ष रक्षा कुरु मम्।
ॐ णमो श्री सिद्धाणं, भाल रक्षा कारकम्।।2।।
ॐ णमो आइरियाणं, हृदय नाभ्योदर रक्षक।
ॐ णमो उवज्झायाणं, रक्षका हस्त पादयो।।3।।
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं, ढालायुध प्रदायकं।
यः णमोकार मंत्रोयं, शिला वज्रमयी कृते।।4।।
चत्तारि मंगलं एवं, सर्व मंगल दायकः।
चत्तारि लोगुत्तमा, रोगोपशर्ग निवारकः।।5।।
चत्तारि शरणं ज्ञेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशकः।
ऐसो पंच णमोक्कारो, सर्व विघ्न विनायकाः।।6।।
शुद्ध भाव युतो भव्यः, प्रातरेव पठेन्तरः।
एकाग्रेन जपतो मंत्रं, प्राप्यं सर्वार्थ सिद्धये।।7।।
परमेष्ठी रक्षा स्तोत्रं, यः पठेत त्रियोगतः।
'विशद' सौख्य सौभाग्यं, लभते श्री शिवं नरः।।8।।

।। श्री शांतिनाथ भगवान की आरती ।।

तर्ज – हो जिनवर, हम सब उतारें....................

पावन ये दीपक लाए, उसमें गौ घृत भर लाए।

शांती जिन की करने आरती

हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।। टेक ।।

नगर हस्तिनापुर में जन्में, ऐरादेवी माता – 2 ।

विश्वसेन के राजदुलारे – 2, देने वाले साता ।।

हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।।1 ।।

भादौ कृष्ण सप्तमी को प्रभु, माँ के गर्भ में आए – 2।

चतुर्निकाय के देवों ने तब–2, दिव्य रत्न वर्षाए ।।

हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।।2 ।।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, जन्म आपने पाया – 2 ।

पाण्डुक शिला पे शत् इन्द्रों ने – 2, जाके न्हवन कराया ।।

हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।।3 ।।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, तुमने दीक्षा धारी – 2।

मन वच तन से हुए विरागी – 2, होकर के अविकारी ।।

हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।।4 ।।

पौष सुदी दशमी को प्रभु जी, केवल ज्ञान जगाए – 2।

कर्म घातिया नाशी होकर–2, अनंत चतुष्टय पाए ।।

हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती–2 ।।5 ।।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, सारे कर्म नशाए – 2।

कुन्दकूट प्रभ तीर्थराज से–2, परम मोक्ष पद पाए ।।

हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।।6 ।।

जिन मंदिर में भक्त आपके, नित प्रति दर्शन पाएँ – 2।

सुखशांती आनन्द 'विशद' शुभ–2, जीव यहाँ पर पाएँ ।।

हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।।7 ।।

।। श्री शांतिनाथ भगवान की आरती ।।

तर्ज – ॐ जय ....

ॐ जय शांतिनाथ देवा ! स्वामी शांतिनाथ देवा।
त्रय पद धारी शांतिनाथ की–2, करते नित सेवा।।
ॐ जय शांतिनाथ देवा!।। टेक।।

हस्तिनापुर नगरी में जन्मे, जग जन हितकारी – 2।
स्वामी, जग जन हितकारी।
विश्वसेन ऐरा देवी माँ–2, हिरण चिन्ह धारी।
ॐ जय शांतिनाथ देवा!।। 1 ।।

जग की नश्वरता को लखकर, हुए आत्मज्ञानी
स्वामी हुए आत्म ज्ञानी
धार दिगम्बर मुद्रा–2, बने श्रेष्ठ ध्यानी।
ॐ जय शांतिनाथ देवा!।। 2 ।।

इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया।
स्वामी आतम ध्यान किया।
केवलज्ञान प्रकट करके फिर–2, पद निर्वाण लिया।
ॐ जय शांतिनाथ देवा! ।। 3 ।।

जो भी द्वार आपके आता, वांछित फल पाता – 2।
'विशद' भाव से आरती करके–2, मन में हर्षाता।।
ॐ जय शांतिनाथ देवा!।। 4 ।।

तुम शांती के दाता, हम पर कृपा करो – 2।
दास खड़ा चरणों में – 2, सारे कष्ट हरो।।
ॐ जय शांतिनाथ देवा!।। 5 ।।

।। श्री मुनिसुव्रत नाथ स्तवन ।।

तर्ज – ऋषभ जिनेन्द्र शतेन्द्र ....

मुनिसुव्रत सुव्रत के धारी, शिव पदकारी संयम पाए।
परम पूज्य तीर्थेश बने प्रभु, इन्द्र नरेन्द्र जो महिमा गाए।।
केवलज्ञानी देव बने जब, कर्म घातिया आप नशाए।
सुर नर मुनि शत इन्द्र विशद, नत होकर के जयकार लगाए।। 1 ।।

प्राणत स्वर्ग से श्री जिनवर जी, राजगृही नगरी में आए।
पिता सुमित्र माता पद्माश्री, की कुक्षी में गर्भ जो पाए।।
रत्न वृष्टि तब देव किए शुभ, खुश होके जयकार लगाए
सुर नर मुनि शत इन्द्र विशद, नत होकर के जयकार लगाए।। 2 ।।

गर्भ समय पर सोलह सपने, मात को प्रभु जी आप दिखाए।
गर्भागम प्रभु पूर्ण किए फिर, राजगृही में जन्म जो पाए।।
शत् इन्द्रों ने मेरू गिरि पे, खुश होके अभिषेक कराए
सुर नर मुनि शत इन्द्र विशद, नत होकर के जयकार लगाए।। 3 ।।

कछुआ लक्षण दाएँ पग में, इन्द्र देखकर के मुस्कराए।
मुनिसुव्रत शुभ नाम दिए तब, श्री जिन की जयकार लगाए।।
दिव्य आभूषण सचि ने लेकर, बालक को अनुपम पहराए
सुर नर मुनि शत इन्द्र विशद, नत होकर के जयकार लगाए।। 4 ।।

केशर कुंकुम आदिक से शुभ, बालक का श्रृंगार कराए।
क्रीड़ा करने बालक के संग, इन्द्रराज बालक बन आए।।
युवा अवस्था के आते प्रभु, को युवराज पिता बनवाए
सुर नर मुनि शत इन्द्र विशद, नत होकर के जयकार लगाए।। 5 ।।

राजा बनकर के फिर स्वामी, न्याय पूर्वक राज्य चलाए।
दोषी को दोषों का फल दे, निर्दोषी को न्याय दिलाए।।

मेघ विघटते देख प्रभू जी, अन्तस् में वैराग्य जगाए।
सुर नर मुनि शत इन्द्र विशद, नत होकर के जयकार लगाए।। 6।।

रत्नत्रय के धारी होकर, मोक्ष हेतु संयम अपनाए।
धार दिगम्बर मुद्रा प्रभु जी, निज आतम का ध्यान लगाए।।
कर्म घातिया नाश किए फिर, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए
सुर नर मुनि शत इन्द्र विशद, नत होकर के जयकार लगाए।। 7।।

स्वर्गों से तब इन्द्र सभी मिल, समवशरण रचना करवाए।
भव्यों के शुभ पुण्योदय से, दिव्य देशना आप सुनाए।।
श्री सम्मेद शिखर पे निर्जर, कूट पे चलकर के प्रभु आए
सुर नर मुनि शत इन्द्र विशद, नत होकर के जयकार लगाए।। 8।।

योग निरोध किए फिर प्रभु जी, निज आतम का ध्यान लगाए।
अष्ट कर्म के नाशी होकर, सिद्ध शिला पे धाम बनाए।।
नित्य निरंजन विशद ज्ञान के, धारी हो शिव के सुख पाए।
सुर नर मुनि शत इन्द्र विशद, नत होकर के जयकार लगाए।। 9।।

इस कलिकाल में दर्शन दुर्लभ, श्री जिनबिम्ब प्रतिष्ठा कराए।
करके जिन अभिषेक प्रभू की, पूजा कर श्रावक सुख पाएँ।।
जागे 'विशद' सौभाग्य हमारे, जिन मुद्रा के दर्शन पाए
सुर नर मुनि शत इन्द्र विशद, नत होकर के जयकार लगाए।। 10।।

दोहा

सुरनर मुनि गणधर करें, श्रीजिन का यशगान।
'विशद' शांति सौभाग्य हो, पाएँ पद निर्वाण।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ स्तोत्र

(भुजंग प्रयात छंद'')

तर्ज – नरेन्द्रं फणेन्द्रं ....

नरेन्द्रं सुरेन्द्रादि पूजें शतेन्द्रं, मुनि सुव्रतं पूज्य पादं जिनेन्द्रं।
प्रभू स्वर्ग प्राणत से चयकर के आये, महा इन्द्र रत्नों की वृष्टी कराये।।

प्रभु गर्भ जन्मादि कल्याण पाए, राजगृही नगरी धन्य बनाए।
माता सुपद्मा प्रभु की कहाए, श्री सुमित्र राजा पिता श्रेष्ठ गाए।।2।।

यदुवंशी राजा बने आप स्वामी, चलाए स्वयं राज्य होके अकामी।
विघटते हुए मेघ लख के विरागी, हुए हैं स्वयंभू प्रभु वीतरागी।।3।।

निजातम को ध्याकर हुए आप ध्यानी, करम घाति नाशे हुए आप ज्ञानी।
समवशर्ण आ देव सुन्दर रचाये, विशद देशना आप जग को सुनाये।।4।।

प्रभु आप चौंतीस अतिशय जगाए, परम प्रातिहार्य के धारी कहाए।
अहो! आप जीवों को भव से तिराते, गृहारिष्ट सारे प्रभु तुम नशाते।।5।।

तुम्हीं ने जगत के सभी दुख नशाए, अतः तव शरण में सभी आज आए।
पड़े हम शरण में तुम्हारी हे स्वामी!, सम्हालो खिवैय्या मुझे मोक्षगामी।।6।।

प्रभु क्रोध औ रोष से तू बचावें, प्रभु मान की तान से तू छुड़ावे।
प्रभु मोह मायादि को तू नशावे, महा लोभ के क्षोभ से तू बचावे।।7।।

विषम रोग का योग भी न सतावे, कभी शोक जीवन में कोई न आवे।
नहीं चोर का जोर जीवन में आवे, नहीं शोर कोई जहाँ में मचावे।।8।।

दुखी दुःख नाशे सदा सुख प्रकाशे, सभी सेवकों को सदा सुख विकासे।
महावीर से वीर तें तू जितावे, महाकर्म के बंध से तू बचावे।।9।।

दोहा

''मुनिसुव्रत व्रत धारकर, हुए त्रिलोकी नाथ।
जिनके चरणों में 'विशद', भक्त झुकायें माथ।।''

।। श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनार्चना।।

गर्भ कल्याणक - 1 (मंगलाचरण)

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

(ज्ञानोदय छन्द)

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद का हो बन्ध।
जिसके फल से भव्य जीव के, जीवन में होवे आनन्द।।
रत्न वृष्टि करके हर्षित हो, देव मनाएँ गर्भ कल्याण।
सुर नर मुनि करते हैं जग में, हर्षित होकर के गुणगान।।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म कल्याणक - 2

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।
इन्द्रराज ऐरावत लेकर, स्वर्ग से आवे भाव विभोर।
जन्म कल्याणक के अवशर पर, आनन्द होवे चारों ओर।।
पाण्डुक शिल्पा पे न्हवन कराएँ, स्वर्ग से आकर के सौ इन्द्र।
हर्षित होके करें वन्दना, सुर नर मुनि जग के देवेन्द्र।।
मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमःचरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक – 3

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

तीर्थंकर प्रकृति के फल से, पाकर के कोई तुच्छ निमित्त।
वीतरागमय हो जाता है, पुण्यवान जीवों का चित्त।।
यह संसार असार जानकर, संयम धरकर बनें ऋशीष।
निज आतम का ध्यान करें जो, जिनके चरण झुकाएँ शीश।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान कल्याणक – 4

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

भेद विज्ञान प्राप्त कर अपने, संत करें कर्मों का नाश।
कर्म घातिया नाशी करते, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाश।।
दिव्य देशना देकर करते, तीर्थंकर जग का कल्याण।
हम भी जिन पदवी को पाने, करते हैं प्रभु का गुणगान।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।4।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक-5

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की जय हो अन्तर्यामी की।

ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय का करके नाश।
अर्हत् पदवी को पाते हैं, करके केवलज्ञान प्रकाश।।
वेदनीय आयु क्षय करके, नाम गोत्र का करें विनाश।
इस संसार वास को तजकर, करते सिद्धशिला पर वास।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते है।।5 ।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मातिशय - 6

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

भव्य जीव तीर्थंकर प्रकृति, धारी होते जो गुणवान।
जन्म से दश अतिशय पाते हैं, लोकोपकारी महति महान।।
दिव्य रत्नवृष्टी करते हैं, भू पर स्वर्गों के देवेन्द्र।
आनन्द छाए तीन लोक में, हर्षित होवें इन्द्र नरेन्द्र।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।6 ।।

ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानातिशय - 7

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

यह संसार असार जानकर, संयम तप धारें जो जीव।
होंय परम सौभाग्यवान वे, कर्म निर्जरा करें अतीव।।
कर्म घातिया के नशते ही, प्रकट होय शुभ केवलज्ञान।
केवलज्ञान के दश अतिशय तब, पाते हैं वे जीव महान।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।7 ।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानातिशय प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

देवोपनीतातिशय - 8

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

केवलज्ञान की महिमा अनुपम, तीन लोक में रही महान।
चौदह अतिशय देवों द्वारा, होते हैं तब महिमावान।।
सुर नर मुनि गणधर विद्याधर, करते हैं जिनका गुणगान।
परम पूज्य अर्हन्त प्रभु का, रहे हृदय में मेरे ध्यान।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।8 ।।

ॐ ह्रीं देवातिशय प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य - 9

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

तरु अशोक सिंहासन चामर, देव दुन्दुभि का हो नाद।
पुष्पवृष्टि शुभ करें देवगण, दिव्य ध्वनि सुन हो आह्लाद।।
भामण्डल की शोभा अनुपम, क्षत्रत्रय सिर रहा महान।
प्रातिहार्य ये अष्ट प्रभू के, प्रगटें पाते केवलज्ञान।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।9 ।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्ययुक्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय - 10

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, होते अनन्त चतुष्टयवान।
ज्ञानादर्श अनन्त वीर्य सुख, प्रगटाते हैं महिमावान।।
समवशरण की रचना करते, स्वर्ग से आके देव महान।
लोकोपकारी दिव्य देशना, समवशरण में करें प्रदान।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।10 ।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय युत श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टादश दोष रहित जिन- 11

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

जन्म जरा मृत्यु विस्मय मद, क्षुधा तृषा अरू निद्रा स्वेद।
रोग शोक अरू मोह अरतिभय, राग द्वेष अरू चिन्ता खेद।।
अष्टादश ये दोष कहे हैं, अर्हन्तों के होंय विनाश।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, करते केवल ज्ञान प्रकाश।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त सुख - 12

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

मोहनीय मोहित कर जग में, बारम्बार घुमाता हैं।
चतुर्गती में जन्म मरण कर, दुःख अनेकों पाता है।।
मोहनीय के नाशी जिनवर, सुख अनंत को पाते हैं।
लोकालोक प्रकाशी अर्हत जग में पूजे जाते हैं।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित सम्यक्त्व गुण सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत ज्ञान – 13

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

ज्ञानावरणी कर्म जीव के, विशद ज्ञान का घाती है।
ज्ञान प्रकट न होने देवे, भारी जो उत्पाती है।।
कर्म नाशकर ज्ञानावरणी, केवल ज्ञान जगाते हैं।
लोकालोक प्रकाशी अर्हत् जग में पूजे जाते हैं।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म रहितानंतज्ञान गुण सहित श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त दर्शन – 14

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

कर्म दर्शनावरणी जग में, दर्शन गुण का घात करे।
दर्श ज्ञान सुख वीर्य जीव के, गुण हैं फिर भी मात करे।।
कर्म दर्शनावरणी नाशी, केवल दर्शन पाते हैं।
लोकालोक प्रकाशी अर्हत्, जग में पूजे जाते हैं।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म रहित अनंत दर्शन गुण सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त वीर्य – 15

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

कर्मान्तराय जगत जीवों के, शांती में बाधा कारी।
दुख पाते हैं जिसके कारण, पल-पल जीव सभी भारी।।
अन्तराय के नाशी प्रभुवर, बल अनन्त प्रगटाते हैं।
लोकालोक प्रकाशी अर्हत, जग में पूजे जाते हैं।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म रहित अनंत वीर्य गुण सहित श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अवगाहनत्व – 16

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

आयू कर्म से जग जीवों ने, जन्म मरण दुख पाया है।
भ्रमण किया चारों गतियों में, आयु कर्म की माया हैं।।
आयु कर्म के नाशी जिनवर, अवगाहन गुण पाते हैं।।
लोकालोक प्रकाशी अर्हत्, जग में पूजे जाते हैं।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं आयु कर्मरहित अवगाहन गुण सहित श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्मत्व – 17

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

नाम कर्म से जीव जगत् में, नाना रूप बनाते हैं।
जिनके कारण राग द्वेष भय, जग के प्राणी पाते हैं।।
नाम कर्म के नाशी श्री जिन, गुण सूक्ष्मत्व जगाते हैं।
लोकालोक प्रकाशी अर्हत्, जग में पूजे जाते हैं।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं नामकर्म रहित सूक्ष्मत्व गुण सहित श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरुलघुत्व – 18

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

गोत्र कर्म जग में जीवों को, उच्च नीच पद दाता है।
उच्च नीच को देख हृदय में, घृणा का भाव जगाता है।।
गोत्र कर्म के नाशी अर्हन्, अगुरू लघुगुण पाते हैं।
लोकालोक प्रकाशी अर्हत्, जग में पूजे जाते हैं।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहित अगुरू लघु गुण सहित श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

अव्याबाधत्व – 19

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

कर्म वेदनीय सुख दुःख वेदन, में कारण बतलाया है।
साता और असाता में जो, हेतू मुख्य कहाया है।।
कर्म नाशकर वेदनीय प्रभु, अव्यावाध गुण पाते हैं।
लोकालोक प्रकाशी अर्हत्, जग में पूजे जाते हैं।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।19।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहित अव्याबाध सुख गुण सहित श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/ धूपं/ फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायक नवलब्धि प्राप्त – 20

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

क्षायिक नव लब्धी के धारी, मुनिसुव्रत जी हुए ऋशीष ।
नवकोटि से उनके चरणों, झुका रहे हम नत हो शीशी ।।
क्षायिक लब्धी पाकर तुमने, पाया अनुपम केवल ज्ञान।
अर्चा करते आज यहाँ पर, हम भी पाने शिव सोपान।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं क्षायिक नव लब्धी प्राप्त श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीपं/ धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

श्री जिनवर की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
श्री मुनिसुव्रत स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।

मुनिसुव्रत जी व्रत के धारी, होकर बने परमऋषिराज।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, अनुपम तारण तरण जहाज ।।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र सभी मिल, किए प्रभु की जय जयकार।
भवि जीवों के करुणा कारी, जिन पद वन्दन बारम्बार।।

मुनिसुव्रत के श्री चरणों में, नत हो शीश झुकाते हैं।
विशद भाव से श्री जिनवर की, अतिशय महिमा गाते हैं।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां सर्व प्रज्ज्वलित दीपं / धूपं/ फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

''श्री पार्श्वनाथ की आरती''

तर्ज - हम सब उतारें तेरी आरती ....

आज करें हम पार्श्वनाथ की, आरती मंगलकारी-2
जिन मंदिर के पार्श्व प्रभु हैं, जग के संकटहारी।।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती ।।टेक।।

अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
अश्वसेन वामा देवी माँ-2 को प्रभु धन्य बनाए।। हो जिनवर.. ।1।।

गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए-2।
छह नौ माह रत्न वृष्टी कर-2, नाचे हर्ष मनाए।। हो जिनवर.. ।2।।

जन्मोत्सव पर मेरु सुगिरि पर, आके न्हवन कराए-2।
शत इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय जयकार लगाए। हो जिनवर.. ।3।।

यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए-2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए।। हो जिनवर.. ।4।।

शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण-भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए-2।
'विशद' आपकी आरती करने-2, भक्त शरण में आए।। हो जिनवर.. ।5।।

।। श्री मुनि सुव्रतनाथ जी की आरती ।।

तर्ज – हो जिनवर, हम सब ....

आज करें हम मुनिसुव्रत की, आरती मंगलकारी – 2 ।
जिन मंदिर में आप विराजे – 2, जग के संकटहारी।।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।।टेक ।।

प्राणत स्वर्ग से चयकर स्वामी, राजगृही में आए – 2।
नृप सुमित्र माँ श्यामा देवी–2, के जो भाग्य जगाए।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।। 1 ।।

वैशाख कृष्ण की दशमी तिथि को, जन्म आपने पाया
सौधर्म इन्द्र ने पाण्डु शिला पर – 2, पावन–न्हवन कराया।
हो जिनवर, हम सब उतारे थारी आरती – 2 ।।2 ।।

फाल्गुन वदि द्वादशी तिथि को , मोक्ष महापद पाए – 2।।
निर्जर कूट सम्मेद शिखर पर – 2, इन्द्र सभी मिल आए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती 2 ।। 3 ।।

मुनिसुव्रत की पावन प्रतिमा, वीतरागमय सोहे – 2।
जग में जो भी श्रद्धालू हैं – 2, उनके मन को मोहे।।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।।4 ।।

घृत का दीप जलाकर के जो, भाव से आरति गाए – 2 ।
सब कष्टो से मुक्ती पाकर–2, निज सौभाग्य जगाए।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती 2 ।। 5 ।।

जागा है सौभाग्य हमारा, हमने दर्शन पाए – 2।
'विशद' आरती करने को हम–2, जिन मंदिर में आए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती – 2 ।।6 ।।

।। श्री नेमिनाथ स्तोत्र ।।

तर्ज – नरेन्द्रं फणेन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं ....

महेन्द्रं गजेन्द्रं नगेन्द्रं महीषं, ध्यायें त्रिलोकी पति जग कवीशं।
चये स्वर्ग से आप गर्भागम पाए, नगर शौरीपुर के जो भाग्य जगाए।।1।।
पिता समुद्र विजय मात ऐरा कहाई, खुशी जन्म से तीनों लोकों में छाई।
हुआ जन्म तब इन्द्र ऐरावत लाया, लिया गोद सचि ने प्रभु को बिठाया।।2।।
गये मेरु गिरि पे न्हवन शुभ कराए, सभी इन्द्र जयकार मिलकर लगाए।
प्रभू शंख लक्षण सुपद श्रेष्ठ पाए, श्री नेमिश्वर आप जिनवर कहाए।।3।।
सहस दश बरस आयु प्रभु की बताई, सहस इक धनुष की है तन की ऊँचाई।
प्रभू श्याम रंग देह का आप पाए, यदुवंशी प्रभू जी जगत में कहाए।।4।।
रहे भ्रात श्री कृष्ण जी के चचेरे, खिवैय्या हो भव सिन्धु के आप मेरे।
किए मित्रों के साथ क्रीड़ा निराली, रही भव्य जीवों का मन हरने वाली।।5।।
बढ़े शुक्ल पक्षीय चन्दा के जैसे, प्रभू लोक में चमके सूरज के जैसे।
गये आप जूनागढ़ ब्याह रचाने, दुल्हन बना राजुलमति को लाने ।।6।।
बंधे बाड़े में पशु देखे रंभाते, द्रवित देखकर दृश्य प्रभु जी हो जाते ।
वैराग्य प्रभु जी हृदय में जगाते, चलकर के प्रभू जी गिरनार जाते।।7।।
प्रभू आप संयम के धारी हो जाते, निर्ग्रन्थ मुद्रा प्रभू आप पाते।
ये सुनकर के राजुलमती खेद पाई, प्रभू से जो नो भव की प्रीति निभाई।।8।।
चली राह पर नेमि के साथ जाती, राजुलमती श्रेष्ठ संयम को पाती।
श्री नेमि जिनवरजी संयम को पाते, निर्ग्रन्थ हो मन से आतम को ध्याते।।9।।
क्षये कर्म घाती विशद ज्ञान पाए, समोशर्ण आ देव पावन रचाए।
खिरी दिव्य ध्वनि प्रभु की ओंकार भाई, सुने देव नर पशु शुभ सौख्य दायी।।10।।
कोई जीव समीचीन श्रद्धा जगाए, कोई ज्ञान जिनवर की वाणी से पाए।
किए कर्म का क्षय प्रभू मोक्ष जाते, जो सिद्धालय जाके परम सौख्य पाते।।11।।
करें भक्ति प्रभू की जो श्रद्धा जगाएँ, वे मुक्ती विशद पुण्य के फल को पाएँ।
जो प्रतिमा प्रभू की प्रतिष्ठा कराएँ, जिनाभिषेक प्रतिमा का पावन कराएँ।।12।।
करें प्रभु की भक्ती जो पूजा रचाएँ, करें आरती श्रेष्ठ जयमाल गाएँ।
भरें कोष वे पुण्य से मोक्षदायी, वे मुक्ती श्री शीघ्र पाऐंगे भाई ।।13।।

दोहा – 'विशद' भाव से जीव जो, अर्चा करें त्रिकाल ।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्यमय, जीवन हो खुशहाल ।।

''श्री नेमिनाथ जिनार्चना''

पंचकल्याणक ''गर्भ कल्याणक''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

पूर्व भवों में पुण्य जगाए, हुए तीर्थंकर प्रकृति वान।
जिसके फल से पाया प्रभु ने, अतिशयकारी गर्भ कल्याण।।
गर्भागम के पूर्वा पर भी, देवरत्न वर्षाएँ आन।
देवों ने जयकारा बोला, खुश होकर के महति महान।।1।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवैद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''जन्म कल्याणक''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

गर्भागम का समय पूर्ण कर, पृथ्वी पर अवतार लिया।
पाण्डु शिला पे मेरू गिरि की, इन्द्र ने शुभ अभिषेक किया।।
दाएँ पग में चिन्ह देखकर, दिया इन्द्र ने प्रभु का नाम।
जयकारों से गगन गुंजाया, चरणों में जो किए प्रणाम।।2।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं जन्म कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवैद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''तप कल्याणक''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

यह संसार असार कहा है, नहीं है इसमें कोई सार।
नित्य निरंतर हो परिवर्तन, पर्यायों का बारम्बार।।
भव्य जीव इसका चिन्तन कर, मन में धारण करें विराग।
दीक्षा कल्याणक पाते हैं, जगजन से प्रभु तजके राग।।3।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''केवल ज्ञान कल्याणक''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

विषयाशा के त्यागी साधू होकर करते आतम ध्यान।
कर्म घातिया नाश करें जो, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।
इन्द्र स्वर्ग से आकर अनुपम, यहाँ मनाएँ ज्ञान कल्याण।
जिनकी अर्चा करके पाते, भव्य जीव सद्ज्ञान निधान।।4।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं केवल ज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/ धूपं/ फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''मोक्ष कल्याणक''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

केवल ज्ञान जगाने वाले होते हैं अर्हत् भगवान।
सर्व कर्म को नाश करें फिर, प्राप्त करें वे पद निर्वाण।।
मोक्ष कल्याणक पाकर के जो, करते सिद्ध शिला पर वास।
जिनकी अर्चा करके होती, भवि जीवों की पूरी आस।।5।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''अष्ट प्रातिहार्य''-अशोक वृक्ष

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

तरु अशोक है निर्मल उन्नत, रत्न रश्मियाँ फैलाए।
मनहर रूप आपका सुन्दर, सुरतरु का आश्रय पाए।।
ऊर्ध्व मुखी ज्यों किरणें तम को, क्षण में दूर भगाती हैं।
पूर्वा चल गिरिवर से मानो दिव्य आरती गाती हैं।।6।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं असोक प्रातिहार्य युत श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/ दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''सिंहासन प्रातिहार्य''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

अद्भुत सिंहासन शोभित है, रंग बिरंगी किरणों वान।
कंचन काया वाले जिस पर, शोभा पाते हैं भगवान।। ।।
उदयाचल के सिंहासन से, रत्न रश्मियाँ बिखराए।
किरणावलि आच्छादित नभ में, अभिनव आभा फैलाए।। 7।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य युत् श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''चौंसठ चँवर''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

अनुपम शुभ्र चँवर ढुरते हैं, धवल पुष्प सम अतिशयवान।
देह देवालय शोभा पाएँ, श्रेष्ठ कांतिमय आभावान।।
उच्च शिखर से स्वर्णाचल के, मानो झरना झरता है।
शुभ्र प्रभा के द्वारा अपने, मन मधुकर को हरता है।।8।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी चँवर प्रातिहार्य युत् श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/ धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''छत्रत्रय प्रातिहार्य''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

मणि मुक्ता मय क्षत्रत्रय हैं, चन्द्र कान्ति सम आभावान।
शोभित होते सिर पर अनुपम, अतिशयकारी दीप्तिमान।।
दिनकर की किरणों को रोके, अतिशयकारी तेज प्रताप।
तीन लोक के ईश्वर अनुपम, कहलाते हो हे जिन! आप ।।9।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं क्षत्रत्रय प्रातिहार्य युत् श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/ दीपं/ धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''देवदुन्दुभि प्रातिहार्य''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

बजने वाली उच्च स्वरों में, सर्व दिशा में हो गुंजन।
तीन लोक में करने वाली, जन मन का शुभ सम्मेलन।।
अनुपम डंका पीट रही जो, धर्म की होवे जय-जय जय।
देव दुन्दुभि बजती अनुपम, जग को दायक रही अभय।।10।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभि सत् प्रातिहार्य युत् श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/ दीपं/ धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''गंधोदक वृष्टि''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

कल्प तरु पारिजात मनोहर संतानक के श्रेष्ठ सुमन।
वृष्टी करते गंधोदक की, देव चलाएँ मंद पवन।।
सुरभित सुमन सुशोभित सुन्दर, ऊर्ध्वमुखी आकर गिरते।
पंक्ति बद्ध अनुपम श्री जिनके, मानो दिव्य वचन खिरते।।11।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं गंधोदक वृष्टि प्रातिहार्य युत् श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/ धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''भामण्डल''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

शुभ दैदीप्यमान भामण्डल, सुर तरु की छवि हीन करे।
स्वयं अचेतन हो करके भी, कांति दिखाए श्रेष्ठ अरे!।।
नाथ! आपकी स्वयं निकटता, पाने भव्य जीव आवें।
रत्नत्रय के धारी होकर, मोक्ष निकेतन को पावें।।12।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य युत् श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''दिव्य ध्वनि''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

श्री जिनेन्द्र की दिव्य देशना, स्वयं मोक्ष की दिग्दर्शक।
समकित गुण प्रगटाने वाली, विशद धर्म की प्रतिभाषक।।
सुनकर दिव्य देशना अनुपम, जीव करें प्रभु की जयकार।
भव्य जीव जो स्वयं समझते, निज निज भाषा के अनुसार।।13।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य युत् श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''अनंत चतुष्टय''

''अनन्त ज्ञान''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रगटाते प्रभु केवलज्ञान।
लोकालोक झलकता जिनके, ज्ञान में अनुपम महिमा वान।।
ॐकारमय दिव्य देशना देते हैं श्री जिन तीर्थेश।
चरण वन्दना करते आके, तीन लोक के जीव अशेष।।14।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''अनन्त दर्शन''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

कर्म दर्शनावरणी नाशी, केवल दर्शन करते प्राप्त।
दर्श अनन्त प्राप्त करके प्रभु, कहलाते तीर्थंकर आप्त।।
सर्व चराचर द्रव्यों का प्रभु, करते अनुपम अवलोकन।
जीव जगत के अर्चा करके, करते अपने कर्म शमन।।15।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण प्राप्त भी नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''अनन्त सुख''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

मोहनीय का क्षय करके प्रभु, सुख अनन्त में करते वास।
जिनकी अर्चा करके होती, भवि जीवों की पूरी आस।।
शुभ अनुपम अभ्युदय सुख में, करते हैं जिनदेव रमण।
सुख के आकांक्षी इस जग के, करते प्रभु के चरण नमन।।16।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित अनन्त सुख गुण प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/ दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

‘‘अनन्त वीर्य’’

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

अन्तराय का क्षय जो करते, पाते हैं वे वीर्यानन्त।
बल अनन्त को पाने वाले, कहलाते जिनवर अर्हन्त।।
भव्य जीव जिन अर्चा करके, पाएँ अनुपम पुण्य निधान।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, प्राप्त करें वे पद निर्वाण।।17।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्मरहित अनन्त वीर्य गुण सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

‘‘जन्मातिशय प्राप्त’’

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

जन्म के दश अतिशय प्रभु पाते, पूर्व पुण्य के फल से आप।
संयम को धारण करने से, कट जाते भव-भव के पाप।।
नेमिनाथ जी पुण्य जगाए, पाए पूर्व का पुण्य निधान।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराए, श्री जिनेन्द्र का महिमावान।।18।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/ दीपं/ धूपं/ फलं/ जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''ज्ञानातिशय प्राप्त''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

रत्नत्रय के धारी मुनिवर, करते हैं निज आतम ध्यान।
कर्म घातिया नाश करें जो, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।
जन्म के दश अतिशय प्रभु पाते, देव करें तव जय जयकार।
सुर नर पशु के इन्द्र सभी मिल वन्दन करते बारम्बार।।19।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/ धूपं/ फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''देवातिशय प्राप्त''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

तीर्थंकर के प्रबल पुण्य से, अनुचर बनते हैं शत इन्द्र।
चौदह अतिशय प्रगटाते हैं, स्वर्ग से आकर के देवेन्द्र।।
भक्ति भाव से अर्चा करते, तीन योग से महति महान।
'विशद' भक्ति के फल से पाते, शिव पद दायक पुण्य निधान।।20।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं देवातिशय प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/ धूपं/ फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''अष्टादशदोष रहित''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

भेद विज्ञान प्राप्त करते हैं, पाने वाले समकित ज्ञान।
तन से चेतन भिन्न जानकर, करते हैं जिन आतम ध्यान।।
केवलज्ञान प्रकट करते ही, करते लोकालोक प्रकाश।
दोष अठारह लगे अनादि, जिनका करते पूर्ण विनाश।।21।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोष रहिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''द्वादश तप धर्म युत''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमि कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।

द्वादश तप दश धर्म के धारी, अनुप्रेक्षा के चिंतन वान।
छियालिस मूलगुणों को पाते, करने वाले जग कल्याण।।
मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, रहे लोक में अपरम्पार।
जिनके चरणों वन्दन करते, सुर नर मुनिवर बारम्बार।।22।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप धर्म धारकाय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''पूर्णार्घ्य''

पशुओं की पीड़ा को लख के, हुए विरागी नेमिनाथ कुमार ।
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के, चरणों में वन्दन बारम्बार ।।

समुद्र विजय माँ वामा देवी, शौरीपुर है महिमावान।
स्वर्ग से चयकर जन्म लिए प्रभु, नेमिनाथजी महति महान।।
इस संसार की माया तजकर, प्रभु जी ने संयम को धार।
मोक्ष मार्ग पर चलकर के प्रभु, हुए विशद भवदधि से पार।।23।।

चलो चलो रे! सभी गिरनार, प्रभू के दर्शन को ।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे, भाई वन्दन को ।।

ॐ ह्रीं षोडश गुण युत अद्भुत वैराग्य के धनी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि पूर्णार्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहाः ।

''श्री नेमिनाथ की आरती''

तर्ज - भक्ति बेकार है ....

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरती करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।टेक।।
शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर-घर मंगल छाया जी।
इन सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है.... ।1।।
नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है.... ।।2।।
मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की ।।
नेमिनाथ दरबार है.... ।3।।
पंच मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।।
नेमिनाथ दरबार है.... ।4।।
केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर को पार करूँ यह, 'विशद' भावना भाई जी।।
नेमिनाथ दरबार है.... ।5।।

।। श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र ।।

।। भुजंगप्रयात छन्द ।।

चिदानन्द देवं परानन्द गेहं, परं ब्रह्मरूपं सदानन्द कूपं।
वरं काम लीलाप्रदं सौख्य धामं, हरो कष्ट मेरे श्री पार्श्वनाथं।।1।।

अबाधं अलक्षं अनन्तं सुखान्तं, जितं मोहमल्लं सुलक्षण स्वरूपं।
जगन्नाथ-मेकं विकल्पं विदोषं, हरो कष्ट मेरे श्री पार्श्वनाथं।।2।।

अहिन्द्रैः खगेन्दैर्नुतं पादपद्मं, प्रशांतैक बुद्धया हतं मार दर्पं।
जगद्व्यापकं ईश्वरं लोकनाथं, हरो कष्ट मेरे श्री पार्श्वनाथं।।3।।

भवाब्धिपतं जीविनां नावतुल्यः, विगंधं विवर्णं सदा ज्योतिरूपं।
सदानंदकदं जितानंद केतुं, हरो कष्ट मेरे श्री पार्श्वनाथं।।4।।

निराकार शुद्धं परं ज्ञान रूपं, सुराच्यं नराच्यं फणीन्द्राच्यं भूपं।
विकायं विमायं स्वयं बुद्धमीशं, हरो कष्ट मेरे श्री पार्श्वनाथं।।5।।

विबंधं विसंगं कलाभं दयालं, ललल्लीलया लोक लीला निकेतं।
प्रसन्नं क्षमेशं करं कल्पवृक्षं, हरो कष्ट मेरे श्री पार्श्वनाथं।।6।।

प्रभु नाम मंत्रं नरा ये स्मरंति, इहामुत्र सौख्यावरं ते लभंते।
प्रसिद्धं प्रबुद्धं परं ज्योतिरूपं, हरो कष्ट मेरे श्री पार्श्वनाथं।।7।।

श्री अश्वसेनात्मज कामधेनुं, समं भूतप्रेतादि दोषापहं तं।
किए ध्यान जीवं हरे कर्म शत्रुं, हरो कष्ट मेरे श्री पार्श्वनाथं।।8।।

(स्रग्धरा छन्द)

घाति व्रात प्रघात, प्रकट निरवधि ज्ञान दृग्वीर्य सौख्यः।
कल्याणैः पंच भेदैः, प्रबल सति चतुर्स्त्रिंशता चाति शेषै।।
यश्चाष्ट प्रातिहार्यैस्-त्रिभुवन पतिता लांछिनैस्तं यजामि।
स्याद्वादामोघ वाक्यं, विदित सुसदयं पार्श्व तीर्थंकराणाम्।।

दोहा - नमः श्री पार्श्वनाथाय, त्रैलोक्याधिपतेर्-गुरुः।
पापं च हरते नित्यं, पार्श्व बिम्बस्य दर्शनं।।

।। इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

।। श्री पार्श्वनाथ जिनार्चना ।।

दोहा – छियालिस गुणधारी प्रभू, दोष अठारह हीन।
भव्य जीव अर्चा करे, हो गुण में तल्लीन ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

(ज्ञानोदय -छन्द)

तीर्थंकर प्रकृति बन्ध शुभ, पूर्व पुण्य से करते जीव।
शुभ भावों के द्वारा करते, पुण्य बन्ध भवि जीव अतीव।।
गर्भ कल्याणक पाने वाले, जन्म के अतिशय पाएँ महान।
तीन लोक में परम पूज्यता, पाते हैं जो महिमावान ।।1।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

यह संसार असार जानकर, धारण करते जो वैराग्य।
संयम को धारण करके जो, स्वयं जगाएँ अपने भाग्य।।
निज आतम का ध्यान करें जो, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
ज्ञान के दश अतिशय पाकर के, कहलाते अर्हत् भगवान।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानातिशय प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

चतुर्निकाय के देव प्रभू की, भक्ती करते मंगलकार।
नृत्यगान कर करें अर्चना, खुश होकर के अतिशयकार।।
देवोंकृत चौदह अतिशय भी, प्रभु जी पाएँ अपरम्पार।
श्री जिन की महिमा दिखलाते, देव स्वर्ग के बारम्बार।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।3।।

ॐ ह्रीं देवोतिशय प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

तीन लोक में पुण्य प्रदायी, प्रभु जी पावें केवलज्ञान।
प्रातिहार्य पाते हैं अनुपम, श्री जिनवर जी महिमावान।।
तीन लोक में जगत पूज्यता, पाने वाले हों भगवान।
जिन की अर्चा करके करते, भव्य जीव जग के कल्याण।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।4।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

ज्ञानावरणी कर्म के क्षय से, प्रकट होय शुभ केवलज्ञान।
कर्म दर्शनावरणी क्षयते, प्रकटे केवल दर्श प्रधान।।

मोह कर्म के क्षय से सुख हो, अन्तराय क्षय से बलवान।
अनन्त चतुष्टय के धारी हों, परम पूज्य अर्हत् भगवान।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

काल अनादी से निगोद में, जन्म मरण के दुख पाए।
फिर स्थावर त्रस पर्यायों, में जाकर के उपजाए।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण को, धारण करते जो ज्ञानी।
'जन्म' दोष के नाशी होते, वीतराग मय विज्ञानी।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।6।।

ॐ ह्रीं जन्मदोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

मृत्युराज का मित्र 'जरा' है, शिथिल करे मानव तन को।
अर्ध मृतक सम बूढ़ापन है, याद दिलाए जीवन को।।
मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, जरा रोग के जो नाशी।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, पद पाते हैं अविनाशी।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।7।।

ॐ ह्रीं जरा रोग निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

मोह कर्म कर्मों का राजा, सब पर हुक्म चलाता है।
मोहित करके जग जीवों को, जग में नाच नचाता है।।
रत्नत्रय के धारी जिनवर, इन्द्रिय मन को विजय करें।
क्षुधा वेदना का क्षय करके, जीवन अक्षय स्वयं करें।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।8।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

शीत उष्ण की बाधाओं से, जीव जगत के दुख पाते।
चतुर्गती व लाख चुरासी, यौनी में जो भरमाते।।
'तृषा' वेदना जग जीवों को, बारम्बार सताती है।
रत्नत्रय की किए साधना, तृषा पूर्ण क्षय जाती है।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।9।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

आश्चर्य कारी वस्तु देखकर, अचरज जो मन में आए।
इन्द्रिय विषय हमेशा मेरे, मन मधुकर को जो भाए।।

विस्मय आशा विस्मित होकर, रत्नत्रय को देख अहा।
नश जाए प्रभु विस्मय मेरा, जीवन का यह लक्ष्य रहा।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।10।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

महिमा विचित्र मधुकर मन की है, तीन लोक में भ्रमण करे।
जल थल नभ में कहीं जगह न, जाकर मन न गमन करे।।
इच्छित वस्तू में रति एवं ,अरति अनिच्छित में पावे।
अरति दोष को नाश करे जो, सिद्ध सदन में वह जावे।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।11।।

ॐ ह्रीं अरति दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

मन वाच्छित वस्तू न पाके, जीव खेद मन में पावें।
खेद रहित हो जाता है वह, मन विजयी जो हो जावें।।
मन विजयी रत्नत्रय धारी, के गुण सारा जग गाए।
खेद रहित होने को हे जिन!, मेरे भी मन में आए।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।12।।

ॐ ह्रीं खेद दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

इच्छित वस्तू को पाकर के, मन बनता है अति रागी।
मन को जीते भव्य जीव जो, कहलाता वह वैरागी।।
अंतरंग बहिरंग परिग्रह, रहित जीव सुख उपजावें।
राग दोष का नाश करें जो, वे शाश्वत निज सुख पावें।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।13।।

ॐ ह्रीं राग दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

मन के जो विपरीत कार्य हो, उससे द्वेष हृदय जागे।
हितकारी जो बात कहे न, उसमें अपना मन लागे।।
नहीं द्वेष की खुशबू जिसमें, होते हैं वे अविकारी।
'द्वेष' दोष को क्षय करते जो, उन्हे पूजते नर नारी।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।14।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

जाति ज्ञान तप कुल तन ऋद्धी, पूजा बल ये आठ प्रकार।
भेद कहे मद के ये जिनवर, इनका भाई करो विचार।।

निर्मद रहे लोक में श्री जिन, मद का कीन्हे आप विनाश।
मान दोष का नाश करें हम, हो जाए मम पूरी आस।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।15।।

ॐ ह्रीं मद दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

मोहित करता मोह जीव को, रहे हिताहित का न ज्ञान।
मोह महामद पीने वाला, कर न सके आत्म कल्याण।।
मोह भूप के जेता हे जिन!, धर्म ध्वजा धारी भगवान।
मोह दोष पर विजय प्राप्त हो, करते हम हे जिन! गुणगान।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।16।।

ॐ ह्रीं मोह दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

अकस्मात इह परभव मृत्यू, वेदना अगुप्ति अरक्षा जान।
सप्त भेद भय के बतलाए, निर्भय रहे श्री भगवान।।
भय होकर भयभीत भागता ,जिसका रहे न नाम निशान।
हो जाए भय दोष नाश मम्, रहे प्रभु के चरणों ध्यान।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।17।।

ॐ ह्रीं भय दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

निद्रा एवं निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला प्रचलावान।
स्त्यानगृद्धी निद्रा के यह, भेद कहे अर्हत् भगवान।।
निद्रा कर्म से हो बेहोशी, हो जाते हैं जीव अचेत।
निद्रा दोष होय क्षय मेरा, हो जाए सद गुणों उपेत।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।18।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

चिंता चिता समान कही है, जिससे होता है संताप।
चेतना-चेतन रहा परिग्रह, मूर्छा दे जीवों को ताप।।
निद्रातीत हुए जिन स्वामी, तीन लोक में महति महान।
निद्रा दोष विजय करके हम, पाएँ पावन पद निर्वाण।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।19।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

जन्म के अतिशय पाते श्री जिन, स्वेद रहित होते भगवान।
सप्त धातु से रहित देह में, स्वर्ग से करते हैं प्रस्थान।।

स्वेद से तन मन में आकुलता, करते हैं जग जीव विशेष।
स्वेद दोष का नाश होय प्रभु, जीवन मंगल होय विशेष।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।20।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

रोगों का घर रहा लोक में, जगज्जीव जो पाएँ शरीर।
भाँति-भाँति के रोग देह में, आकर के देते हैं पीर।।
परमौदारिक देह के धारी, रोग रहित होते भगवान।
हो निरोग तन जिन अर्चा से, जीवों का होवे कल्याण।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।21।।

ॐ ह्रीं रोग दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

इष्ट वस्तु का हो वियोग तो, जीव प्राप्त करते हैं शोक।
आशाओं का गर्त है भारी, समा जाय जिसमें त्रय लोक।।
आशाओं को तजने वाले, हो जाते हैं स्वयं अशोक।
शोक विजय करने को हे जिन!, चरणों में देते हैं ढोक ।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।22।।

ॐ ह्रीं शोक दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

बाल-बाल व बालमरण है, मरण बाल पण्डित पहचान।
पण्डित मरण व पण्डित-पण्डित, पंचम मरण पाएँ भगवान।।
पंचम चारित यथाख्यात से, मरण का भी हो जाए अंत।
मरण दोष के नाश हेतु हम, पूज रहे हम हे भगवान!।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।23।।

ॐ ह्रीं मरण दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो ।
जय बोलो अविकारी की, पावन संयमधारी की ।।

पार्श्व प्रभु जी वैजयंत से, चयकर पाए गर्भ कल्याण।
अश्वसेन माँ वामा के सुत, काशी में जन्मे भगवान।।
पार्श्व प्रभु उपसर्ग विजेता, हुए जहाँ में महिमावान।
जिनकी अर्चा करके पाएँ, 'विशद' मोक्ष पद का सोपान।।

चलो चलो रे सभी नर-नार, प्रभु के वंदन को ।
मिलता है पुण्य अपार, प्रभु के अर्चन को ।।24।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशद गुण सहित अष्टादश दोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ से महावीर तक धर्म की गंगा बहती आई,
गौतम गणधर से लेकर के कुन्द-कुन्द गुरु ने पाई।
उसी धर्म गंगा का युग में आदि सिंधु ने किया प्रचार,
संत हृदय के मन को भाई उस पर सबने किया विचार ।।

।। श्री पार्श्व गुणगान ।।

– दोहा –

पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा बड़ी विशाल।
गुण गाते जो भाव से, वे हों मालामाल ।

(चौपाई)

जय जय श्री अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
वीतराग धर संत नमस्ते, परम पूज्य धीमंत नमस्ते।।1।।

शुद्ध बुद्ध चैतन्य नमस्ते, धन्य धन्य गुरु धन्य नमस्ते।
शुद्धज्ञान चिद्रूप नमस्ते, पावन शुद्ध स्वरूप नमस्ते।।2।।

शुद्धबुद्ध अविकार नमस्ते, धारी जिन शिवकार नमस्ते।
परमपूज्य जिनराज नमस्ते, मुक्ति वधू के ताज नमस्ते।।3।।

तारण तरण जहाज नमस्ते, दायक शिव साम्राज्य नमस्ते।
शुद्ध बुद्ध अवलोक नमस्ते, पावन परम विशोक नमस्ते।।4।।

परम शुद्ध सुखरूप नमस्ते, वन्दित सुर नर भूप नमस्ते।
जिनवर अर्हज्जात नमस्ते, दायक परम प्रभात नमस्ते।।5।।

मुक्ती के सोपान नमस्ते, प्राप्त किए निर्वाण नमस्ते।
जिनवर परम प्रमेय नमस्ते, देते सम्यक् ध्येय नमस्ते।।6।।

पूजनीय जिनदेव नमस्ते, जिनवर पूज्य सदैव नमस्ते।
सर्व दोष निर्मुक्त नमस्ते, छियालिस गुण संयुक्त नमस्ते।।7।।

– दोहा –

पार्श्वनाथ भगवान की, रही निराली शान।
उपसर्ग विजेता पार्श्व जिन, के पद 'विशद' प्रणाम।।

।। श्री महावीर स्तोत्र ।।

सोरठा

महिमा का ना पार, वर्धमान जिनराज की।
वन्दन बारम्बार, करते हैं हम भाव से।।

तर्ज – नरेन्द्रं फणेन्द्रं ....

गणेन्द्रं मुनीन्द्रं सुरेन्द्रादि देवं, प्रभु वीर की जो करें सर्व सेवं।
परम वीतरागी हैं निर्ग्रन्थ स्वामी, त्रिलोकीपति हैं विशद मोक्षगामी।।
है छवि वीतरागी जो मन को लुभाए, किए दर्श मन में जो श्रद्धा जगाए।
जो सुज्ञान वाणी को सुनकर जगाए, सुचारित्र जिनवर की चर्या से आए ।।1।।
प्रभु दिव्य ध्वनि आप जग को सुनाए, महामोह तम को जो वाणी नशाए।।
सुतप धारकर के हुए कर्म नाशी, हुए आप केवल्य ज्ञान प्रकाशी।
जले क्रोध की आग से लोक सारा, बहाई क्षमा धर्म की आप धारा।
जो सुज्ञान वाणी को सुनकर जगाए, सुचारित्र जिनवर की चर्या से आए ।।2 ।।
शिला मान की शीश पर जग उठाए, विनय भाव मार्दव धरम तुम सिखाए
रहे माया की छाया में जग के प्राणी, सरलता हृदय में धरें श्रेष्ठ ज्ञानी।
सदा लोभ जीवों के मन को सताए, धरम शौच धारो प्रभू जी बताए।
जो सुज्ञान वाणी को सुनकर जगाए, सुचारित्र जिनवर की चर्या से आए ।।3 ।।
रहे सत्य संयम सुतप त्याग धारी, आकिन्चन्य ब्रह्मचर्य धर्मावतारी।
महाव्रत समिति गुप्ति जीवन में पावें, वे मुक्ती के राही ऋषीश्वर कहावें।
प्रभू माँ पिता हो विधाता हमारे, हो दीनों के रक्षक प्रभू तुम सहारे।
जो सुज्ञान वाणी को सुनकर जगाए, सुचारित्र जिनवर की चर्या से आए ।।4 ।।
कभी संकटों में तुम्हें जब पुकारा, दिया आपने तब प्रभू जी सहारा।
जो श्रद्धा के फूलों से प्रभु जी को ध्यावें, महासम्पदा वे 'विशद' जीव पावें।
सुबह शाम जो गीत भक्ती से गाएँ, परम शांति सौभाग्य जीवन में पाएँ।
जो सुज्ञान वाणी को सुनकर जगाए, सुचारित्र जिनवर की चर्या से आए ।।5 ।।

।। दोहा ।।

भक्त खड़े हैं द्वार पे, शरण लीजिए देव!।
वर्धमान जिनराज की, करें भाव से सेव।।

।। श्री महावीर गुणानुवाद ।।

श्री वीर प्रभु के चरणों में, श्रद्धा के सुमन चढ़ाएँ हम।
जिनके आदर्शों को पाकर, जीवन की ज्योति जलाएँ हम।।
श्री वीर प्रभु के चरणों में, श्रद्धा के सुमन चढ़ाएँ हम।। टेक।।

हर प्राणी से मम मैत्री रहे, उर से करुणा का स्रोत बहे।
निष्काम स्व पर कल्याण करें, दुनियाँ को सुपथ दिखाएँ हम।।
श्री वीर प्रभु के चरणों में, श्रद्धा के सुमन चढ़ाएँ हम।
जिनके आदर्शों को पाकर, जीवन की ज्योति जलाएँ हम।।1 ।।

दृढ़ निष्ठा नियम निभाने में, मुक्ती पथ पर बढ़ जाने में।
मजबूत मनोबल हो मेरा, कायरता हृदय न लाएँ हम।।
श्री वीर ....।।2।।

गुरुदेव शरण को पा जाएँ, कष्टों में न हम घबड़ाएँ।
हो मुक्त विचारों से सहसा, निज आत्म विजय को पाएँ हम।।
श्री वीर ....।।3 ।।

जीवन में तप संयम पाएँ, आराध्य चरण को अपनाएँ।
अविचल मन सत्य अहिंसा का, इस जग को पाठ पढ़ाएँ हम।।
श्री वीर ....।।4।।

यश पद लोलुपता को छोड़ें, मन आत्म सुहित में हम जोड़ें।
कथनी करनी हो एक 'विशद', पावन शिव पद अपनाएँ हम।।
श्री वीर ....।।5।।

जग में सदियों से भटक रहे, पर परिजन हमने अपनाए।
अब भेद ज्ञान की छैनी से, निज चेतन में रम जाएँ हम।।
श्री वीर ....।।6 ।।

।। श्री महावीर स्वामी जिनार्चना ।।

गर्भ कल्याणक - 1

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जगजन के कल्याणी की।।

(ज्ञानोदय छन्द)

पूर्व भवों के पुण्य योग से, तीर्थंकर प्रकृति पाते।
इसी पुण्य से गर्भ के पहले, रत्न देव शुभ वर्षाते।।
सोलह स्वप्न देखती माता, मन में अतिशय हर्षाए।
गर्भ कल्याणक प्रभु जी पावें, सर्व जगत मंगल छाए।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 1 ।।

ॐ ह्रीं पूर्व भवे सोलह कारण भावना भाव्य तीर्थंकर प्रकृति बन्धक गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म कल्याणक - 2

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

गर्भागम का काल पूर्ण कर, जन्म कल्याणक प्रभु पाते।
इन्द्र राज ऐरावत पर ले, मेरू गिरि पे ले जाते।।
पाण्डुक शिला पे सहस आठ शुभ, कलश से न्हवन कराते हैं।
महिमा गाते इन्द्र सभी मिल, जय जयकार लगाते हैं।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम, विशद भावना भाते हैं।। 2 ।।

ॐ ह्रीं जन्म कल्याणक प्राप्त दश जन्मातिशय धारक श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''तप कल्याणक - 3''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

यह संसार असार जानकर, मन वैराग्य जगाते हैं।
हो विरक्त संसार वास से, विशद भावना भाते हैं।
रत्नत्रय के धारी होकर, महाव्रतों को पाते हैं।
दीक्षा कल्याणक पाके प्रभु, मोक्ष मार्ग अपनाते हैं।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 3।।

ॐ ह्रीं द्वादश तपधारक दीक्षा कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।चरणाभ्यां/दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''केवल ज्ञान कल्याणक - 4''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

इस शरीर से भिन्न आत्मा, का प्रभु ध्यान लगाते हैं।
चित् स्वरूप चैतन्य विशद शुभ, निज चेतन को ध्याते हैं।।
श्रेण्यारोहण करके स्वामी, कर्म घातिया नाश करें।
लोकालोक प्रकाशी अर्हन्, केवल ज्ञान प्रकाश करें।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 4।।

ॐ ह्रीं समशरण विराजित दश केवल ज्ञानातिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपानीति स्वाहा।

"मोक्ष कल्याणक - 5"

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

आयु कर्म का अन्त प्राप्त कर, करतें हैं प्रभु योग निरोध।
निज स्वरूप में रमण करें प्रभु, प्रगटाते हैं आतम बोध।।
सर्व कर्म का क्षय करके प्रभु, करते सिद्ध शिला सम्प्राप्त।
सुखानन्त में हों निमग्न जो, प्रभु जी कहलाते हैं आप्त।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 5।।

ॐ ह्रीं सर्व घाति अघाती कर्म रहित मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

"सम्यक्त्व लब्धी - 6"

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

दर्श मोहनीय कर्म जीव की, सम्यक् श्रद्धा करे विनाश।
मिथ्यातम का उदय प्राप्त कर, मोहनीय का होय विकाश।।
दर्श मोहनीय के क्षय होते, समकित गुण होता सम्प्राप्त।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने वाला, भव्य जीव बनता है आप्त।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 6।।

ॐ ह्रीं क्षायिक सम्यक्त्वलब्धि समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/दीपं/धूपं/फलं अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''चारित्र लब्धि - 7''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

चारित मोहकर्म के पच्चिस, भेद बताए विविध प्रकार।
है कषाय जो कषे जीव को, भ्रमण कराए यह संसार।।
मोह कर्म का क्षय करके प्रभु, सुखानंत में करते वास।
चतुर्गती संसार भ्रमण से, ले लेते हैं जो अवकाश।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 7।।

ॐ ह्रीं क्षायिक चारित्र लब्धि समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''केवल ज्ञान लब्धि - 8''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

ज्ञानावरणी कर्म जीव के, ज्ञान सुगुण का नाशी है।
करे नाश यह कर्म जीव जो, वह शिव का प्रत्यासी है।।
रत्नत्रय का धारी होकर, करने वाला आतम ध्यान।
क्षायक श्रेणी पर आरोहण, करके पाए केवल ज्ञान।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 8।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान लब्धि समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

"केवल दर्शन लब्धि - 9"

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

कर्म दर्शनावरणी जग में, दर्शन गुण का करे विनाश।
है चैतन्य स्वरूपी आतम, उसका ना करता आभाष।।
तन चेतन का भेद जगाने, वाले करते निज का ध्यान।
कर्म दर्शनावरणी नाशी, पाऐं केवल दर्श निधान।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शन लब्धि समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

"क्षायक दान लब्धि - 10"

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

दानान्तराय कर्म के कारण, जीव नहीं कर पाते दान।
दान में आवें विघ्न अनेकों, हो पाता है नहीं निदान।।
दानान्तराय कर्म क्षय करके, क्षायक दानलब्धि कर प्राप्त।
पाकर के अर्हन्त अवस्था, बन जाते हैं श्री जिन आप्त।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं अनंत दानलब्धि समन्वितश्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

"क्षायक लाभ लब्धि - 11"

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

लाभान्तराय कर्म के रहते, प्राप्त जीव के होय अलाभ।
करके भी पुरुषार्थ लोक में, विशद प्राप्त न होवे लाभ।।
लाभान्तराय कर्मक्षय करके, क्षायक लाभ होय सम्प्राप्त
प्राप्त होय अरहंत अवस्था, कहा लोक में जिनको आप्त।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायक लाभ लब्धि समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

"क्षायक भोग लब्धि - 12"

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

भोगान्तराय भोग प्राप्ती में, कारण माना अपरम्बार।
विघ्न डालता जो भोगों में, जग जीवों को बारम्बार
भोगान्तराय कर्मक्षय होते, प्राणी पाएँ क्षायक भोग।
निज स्वभाव में रमण होय फिर, करें जीव चेतन उपभोग।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायकभोगलब्धि समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''क्षायक उपभोग लब्धि - 13''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

उपभोगान्तराय कर्मोदय में, प्राप्त नहीं होवें उपभोग।
विघ्न प्राप्त होते रहते हैं, वस्तू का पाकर भी योग।।
उपभोग अन्तराय कर्म विनाशी, होते हैं अर्हत् भगवान।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, प्राप्त करें शिवप्रद सोपान।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 13 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायकउपभोगलब्धि समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''अनन्तवीर्य लब्धि - 14''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

कर्मोदय से वीर्यान्तराय के, वीर्यानन्त से होय विहीन।
अल्प शक्ति के धारी होकर, भव में भटके होके दीन।।
वीर्यान्तराय के क्षय होते ही, वीर्यानन्त होय सम्प्राप्त।
अर्हत् पद के धारी होकर, जीव स्वयं ही बनते आप्त।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।।14 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतवीर्यलब्धि समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''अष्ट प्रातिहार्य - अशोक वृक्ष - 15''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

श्री जिनवर जी जिसके नीचे, चार घातिया को घाते।
तरु अशोक वह कहे जिनेश्वर, विशद ज्ञान को प्रगटाते।।
शोक रहित हो जाते हैं वे, श्री जिन पद जो पूज रहे।
मोक्ष मार्ग पर चलने वाले, शिवपथ राही आप कहे।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 15 ।।

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष महाप्रातिहार्य सहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''पुष्पवृष्टि - 16''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

कल्पतरू के रंग बिरंगे, पुष्प देव वर्षाते हैं।
प्रभु के यश की खुशबू मानो, चतुर्दिशा बिखराते हैं।।
लौकिक वैभव छोड़ अलौकिक, वैभवश्री जिनवर पाए।
अतः जगत यह श्री जिनवर की, खुश होकर महिमा गाए।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 16 ।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि महाप्रातिहार्य सहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''दिव्य ध्वनि - 17''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

दिव्य देशना सुनकर प्रभु की, शंकाएँ सब मिट जावें।
मोक्ष महल की नींव सु सम्यक्, दृष्टी जीव श्रेष्ठ पावें।।
नाथ! आपकी शरण मिली न, अतः जगत में भटकाए।
यह संसार असार छोड़कर, शिव पद पाने हम आए।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 17 ।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि महाप्रातिहार्य समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

''चतु:षष्ठि चॅवर - 18''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

चौंसठ चँवर प्रभू के आगे, देव ढुराते मंगलकार।
मानो निर्मल जल के झरने, झरते हों ज्यों अपरम्पार।।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, प्रातिहार्य जिनवर पाते।
सुर नर मुनि विद्याधर आदिक, श्री जिन पद में सिरनाते।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 18 ।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि चामर महाप्रातिहार्य समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

''सिंहासन प्रातिहार्य - 19''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

नाना मणियों जड़ित सिंहासन, स्वर्णमयी शुभकार रहा।
अधर विराजें जिस पे श्री जिन, प्रातिहार्य ये श्रेष्ठ कहा।।
चरण शरण का दास बने जो, पावे देवों का आसन।
लौकिक सुख को पाने वाला, पावे पावन सिंहासन।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 19।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन महाप्रातिहार्य सहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''भामण्डल प्रातिहार्य - 20''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

श्री जिनवर के पृष्ठ भाग में, भामण्डल है आभावान।
परमौदारिक देह के धारी, कर्म कालिमा रहित महान।।
आभामण्डल श्री जिनवर का, जिसको भी मिल जाएगा।
तीन लोक में भव्य जीव वह, स्वयं पूज्य हो जाएगा।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 20।।

ॐ ह्रीं भामंडल महाप्रातिहार्य सहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा

''देवदुन्दुभि - 21''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

मधुर ध्वनि में दुन्दुभि बजती, यश कीर्ति फैलाती है।
मोक्ष मार्ग के राही प्रभु की, अतिशय महिमा गाती है।।
विशद ज्ञान को पाया प्रभु ने, सबको यही बताती है।
प्रभु के दर्शन करके जग की, मोहकता न भाती है।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं सुरदुंदुभि प्रातिहार्य समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा

''क्षत्रत्रय प्रातिहार्य -22''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

तीन लोक के नाथ आप शुभ, क्षत्रत्रय दर्शाते हैं।
रत्न जड़ित जो धवल मनोहर, जिन महिमा बतलाते हैं।।
ऐसे सुन्दर क्षत्र प्रभू के, शीश पे शोभा पाते हैं।
क्षत्र छाया में रहें आपकी, विशद भावना भाते हैं।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।।22।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय महाप्रातिहार्य सहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

''पाँच नाम धारक श्री वीर प्रभु - 23''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

वर्धमान सन्मति कहलाए, वीर और अतिवीर विशेष।
महावीर शुभ नाम के धारी, कहलाए पावन तीर्थेश।।
प्रभु के सार्थक नाम कहे ये, यथानाम प्रभु हैं गुणवान।
महिमा जिनकी अगम अगोचर, करने वाले जग कल्याण।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 23 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीर अतीवीर सन्मति वर्धमान महावीर नाम अलंकृत श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

''जन्म-निर्वाण कल्याण भूमि - 24''

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

अन्तिम शासन नायक प्रभु जी, सिंह लक्षणधारी भगवान।
आयु बहत्तर वर्ष ऊँचाई, सात हाथ तन स्वर्ण समान।।
कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, पावापुर निर्वाण स्थान।
विशद भाव से जिनकी अर्चा, करके हो जग का कल्याण।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 24 ।।

ॐ ह्रीं जन्म भूमि कुण्डलपुर (वैशाली) निर्वाण भूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

छियालीस मूलगुण सहितजिन - (पूर्णार्घ्य)

वीर प्रभू की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो केवलज्ञानी की, जग जन के कल्याणी की।।

चौंतिस अतिशय प्रातिहार्य वसु, गाए क्षायक लब्धीवान।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष प्रभु, पाने वाले पंच कल्याण।।
मंगलमय प्रभु रहे लोक में, मंगलकारी महति महान।
'विशद' भाव से अर्चा करके, भव्य जीव पाते निर्वाण।।

वीर प्रभू के चरण युगल में, सादर शीश झुकाते हैं।
मनोकामना पूर्ण होय मम्, विशद भावना भाते हैं।। 25 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट् चत्वारिंशत् गुण सहित नवलब्धि पंचनाम धारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चरणाभ्यां/ दीपं/ धूपं/फलं/ पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

24 तीर्थंकर के चिन्ह

ऋषभनाथ का चिन्ह बैल है, अजितनाथ का हाथी।
सम्भव जिन का घोड़ा बन्दर, अभिनन्दन का साथी।।1 ।।
सुमतिनाथ का चकवा जानो, पद्मप्रभ का लाल कमल।
श्री सुपार्श्व का चिन्ह है स्वस्तिक, चन्द्रप्रभ का चंद अमल।।2 ।।
पुष्पदन्त का चिन्ह मगर है, कल्पतरु शीतल भगवान।
श्री श्रेयांस का चिन्ह है गेण्डा, भैंसा वासुपूज्य का मान।।3 ।।
विमलनाथ का चिन्ह है सूकर, अनन्तनाथ का सेही जान।
धर्मनाथ का वज्रदण्ड है, शांतिनाथ का हिरण महान।।4 ।।
कुन्थुनाथ का चिन्ह है बकरा, अरहनाथ का मछली जान।
मल्लिनाथ का कलश है पावन, मुनिसुव्रत का कछुआ मान।।5 ।।
नमिनाथ का नील कमल शुभ, नेमिनाथ का शंख महान।
पार्श्वनाथ का सर्प चिन्ह है, सिंह वीर का महिमावान।।6 ।।

दोहा

तीर्थंकर की चिन्ह से, 'विशद' होय पहचान।
वन्दन करते जिनचरण, पाने शिव सोपान।।

।। वीर स्तवन ।।

तर्ज – जय जय जिनेन्द्र ....

जय–जय जिनेन्द्र देव, महावीर हमारे।
इस लोकवर्ती जीवों के, आप सहारे ।। 1।।
जय–जय दिगम्बर देव का, गुणगान हम करें।
जय लोक पूज्य देव का, शुभ ध्यान हम करें ।।2।।
छह माह पूर्व इन्द्र सौ, नगरी को बनाए।
कुण्डलपुरी में आके सभी, मोद मनाए ।। 3।।
सिद्धार्थ राज त्रिशला के, नन्द कहाए।
षष्ठी अषाढ़ शुक्ल को, प्रभु गर्भ में आए ।। 4।।
शुभ चैत्र सुदी तेरस को, जन्म लिए थे।
आनन्द रहस देवों ने, आके किए थे ।। 5।।
तब इन्द्रराज ऐरावत, स्वर्ग से लाया ।
शचि ने उठाके गोद में, ले जा के बिठाया ।।6।।
पाण्डुक शिला पे प्रभु का, अभिषेक कराया।
इन्द्रों ने हो प्रसन्न, जयकार लगाया ।। 7।।
बालक के दाएँ पग में, सिंह चिन्ह दिखाया।
श्री वर्धमान नाम इन्द्र, देव बताया।। 8।।
माता के हाथ सौप दिए, देव बाल को।
परिजन सभी प्रसन्न हुए, देख लाल को।। 9।।
करके विहार चारण, ऋषिराज जी आए।
बालक को देख मन में, समाधान जो पाए।। 10।।
मुनिराज नाम सन्मति, देकर के गये थे।
आनन्द मग्न मुनिवर, निज मन में भये थे।। 11।।
मित्रों के साथ क्रीड़ा, उद्यान में किए ।
आके परीक्षा देव तब, कुमार की लिए।। 12।।
फण को फैलाए सर्प, फुँकारता आया।
भग जाते सभी मित्र भय न, बाल ने पाया ।।13।।

बालक ने पैर मार के, फणधर को हराया।
निज रूप में आकर के देव, शीश झुकाया ।। 14।।
तब वीर नाम की सभी, जयकार लगाई।
हर्षित हुए नगर के, सभी लोग लुगाई ।। 15।।
हाथी ने नगर आके, उत्पात मचाया।
तब वीर ने मुक्के-से, मार-मार हराया।। 16।।
यह दृश्य देख लोग किए, आश्चर्य भारी ।
अतिवीर नाम दिए लोग, मान उपकारी।। 17।।
वैराग्य तीस वर्ष की, आयू में जो पाए।
बनकर के मुनि जंगल में, ध्यान लगाए।। 18।।
रति कामदेव जंगल में, सैर को आए ।
पाई विजय सभी पे, कामदेव सुनाए।। 19।।
रति ने कहा क्या वीर पे, तुमने विजय पाई।
तब वीर पे विजय के हेतु, जोर लगाई।। 20।।
कामदेव ने कई देवियों को, यहाँ बुलाया।
तब वीर बली पे विजय का, हुक्म सुनाया।। 21।।
सब हार मान देवियाँ, चरणों में आ झुकीं।
जिनराज की शरण में जो, भक्ति को आ रुकीं।।22।
लाचार होके कामदेव, चरण झुक गया।
महावीर नाम तब दिया, जिनराज का नया।। 23।।
ये पाँच नाम जिनवर के, श्रेष्ठ कहे हैं।
करते प्रभू की भक्ती, जो भक्त रहे हैं।। 24।।
हम ''विशद'' भाव से प्रभू का, ध्यान करेंगे।
जब तक है श्वाँस तन में, गुणगान करेंगे।। 25।।

दोहा

महावीर से वीर की, बोलें जय जयकार।
भक्ति वन्दना नित करें, नत हो बारम्बार।।

।। श्री महावीर भगवान की आरती ।।

तर्ज – आज करें हम ....

आज करें हम वीर प्रभु की, आरति मंगलकारी–2
जिन प्रतिमा मंदिर में सोहे–2, अतिशय महिमाकारी
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती–2 ।। टेक ।।
कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, मात–पिता हर्षाए – 2 ।
माँ त्रिशला सिद्धारथ के गृह–2, अतिशय मंगल छाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती।। 1।।
तीस वर्ष की भरी जवानी, में प्रभु दीक्षा धारे – 2 ।
रोक सका ना कोई प्रभु को – 2, सब समझा के हारे।।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती ।। 2 ।।
बारह वर्ष तपस्या करके, केवल ज्ञान जगाए – 2।
ॐकार मय दिव्य देशना–2, जग को प्रभु सुनाए।।
हो जिनवर, हम हम सब उतारें थारी आरती ।। 3 ।।
पावापुर के पद्म सरोवर, में प्रभु ध्यान लगाए – 2 ।
अपने सारे कर्म नाशकर – 2, ''विशद'' मोक्ष पद पाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती ।। 4 ।।
घृत का दीप जलाकर के हम, आरति करने आए – 2।
जिन मंदिर में वीर प्रभु के – 2, हमने दर्शन पाए।।
हो जिनवर, हम हम सब उतारें थारी आरती।। 5 ।।

।। श्री सिद्धाराधना ।।

परम सिद्ध की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
सिद्ध शिला अभिरामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।
काल अनादि मिथ्या मति से, कर्म बन्ध पाया।
ज्ञानावरणी कर्म ने हमको, जग में भरमाया।।
पंच भेद ज्ञानावरणी के, आगम में गाए।
मति श्रुत अवधि मनः पर्यय औ, केवल कहलाए।।
मति ज्ञानावरणी के क्षय से, मति ज्ञान जागे।
इन्द्रिय मन से प्रकट होय जो, चित् में मन लागे।
श्रुत ज्ञान मति ज्ञान के द्वारा, आतम को ध्याएँ।
अवधि मनः पर्यय पाकर के, विशद ज्ञान पाएँ।।
सिद्धों के गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
मोक्ष महल हम जाऐंगे, लौट के फिर न आऐंगे।। 1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहित अनन्त ज्ञान गुण सहित श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः/चरणारविन्दाय/नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

परम सिद्ध की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
जय हो अन्तर्यामी की, सिद्ध शिला अभिरामी की ।।
निद्रा एवं निद्रा-निद्रा प्रचला भी जानो।
प्रचला-प्रचला स्त्यानग्रद्धी, पंचभेद मानो।।
चक्षु अचक्षु अवधि दर्शना-वरणी गाए हैं।
केवल दर्शना वरण कर्म नौ, भेद बताएँ हैं।।
कर्म दर्शनावर्णी का क्षय, करते जो भाई।
केवल दर्शन पाने वाले, पाते प्रभुताई।।
सहज शुद्ध चैतन्य स्वरूपी, आतम को ध्याते।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपदवी पाते।।
सिद्धों के गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
मोक्ष महल हम जाऐंगे, लौट के फिर न आऐंगे।। 2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मरहित अनन्तदर्शन गुण सहित श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः/चरणारविन्दाय/नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

परम सिद्ध की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
सिद्ध शिला अभिरामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।
सुख अरु दुख का वेदनकारी, वेदनीय गाया।
काल अनादी बंधे कर्म ने, जग में भरमाया।।
साता और असाता आए, वेदनीय द्वारा।
सुख दुख के वेदन करने में, समय गया सारा।।
स्पर्शन के आठभेद हैं, रस के पंच कहे।
घ्राणेन्द्रिय के भेद कहे दो, नेत्र के पंच रहे।।
कर्णेन्द्रिय के विषय सप्त हैं, मन का श्रुत जानो।
अव्याबाध गुण प्राप्त कर्म के, क्षय से हो मानो।।
सिद्धों के गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
मोक्ष महल हम जाएेंगे, लौट के फिर न आएेंगे।। 3।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मरहित अनन्तदर्शन गुण सहित श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः/चरणारविन्दाय/नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

परम सिद्ध की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
सिद्ध शिला अभिरामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।
मोहनीय के भेद कहे दो, दर्शन मोह चरित्र ।
दर्श मोह के मिथ्या सम्यक्, मिश्र भी जानो मित्र ।।
कषाय अनन्तानुबन्धी एवं, अप्रत्याख्यान जानो।
प्रत्याख्यान संज्वलन सब ये, चार-चार मानो।।
क्रोध मान मायाचारी व, लोभ रूप गाए।
हास्य रति व अरति शोक भय, ग्लानी कहलाए।।
स्त्री पुरुष नपुंशक ये सब, नो कषाय जानो।
सुखानन्त हो मोह कर्म का, क्षय कर के मानो।।
सिद्धों के गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
मोक्ष महल हम जाएेंगे, लौट के फिर न आएेंगे।। 4।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मरहित अनन्तदर्शन गुण सहित श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः/चरणारविन्दाय/नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

परम सिद्ध की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
सिद्ध शिला अभिरामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।
जैनागम में आयु कर्म के, भेद चार गाए।
देव नारकी मानव पशु ये, सब ही कहलाए।।
जीव अनादी से निगोद में, जन्म मरण पाते।
होय निगोदावास पूर्ण तो, त्रसगति में आते।।
एकेन्द्रिय द्वय त्रय चउ इन्द्री, पंचेन्द्रिय धारी।
संज्ञी और असंज्ञी होते, प्राणी संसारी।।
आयु कर्म का क्षय संयम के, द्वारा पाते हैं।
अवगाहन गुण पाने वाले, सिद्ध कहाते हैं।।
सिद्धों के गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
मोक्ष महल हम जाएँगे, लौट के फिर न आएँगे।। 5।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मरहित अनन्तदर्शन गुण सहित श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः/चरणारविन्दाय/नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

परम सिद्ध की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
सिद्ध शिला अभिरामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।
देह की रचना करने वाला, नाम कर्म गाया।
आगम में जो ब्यालिस भेदों, वाला बतलाया।।
जिसके उत्तर भेद तिरानवे, भी बतलाए हैं।
बार-बार जग में भ्रमकर के, सारे पाए हैं।।
जान के इस संसार की माया, होकर श्रद्धानी।
भेद ज्ञान प्रगटाने वाले, होते हैं ज्ञानी।।
सम्यक् चारित तपकर ज्ञानी, कर्म नशाते हैं।
गुण सूक्ष्मत्व प्राप्त करके वे, सिद्ध कहाते हैं।।
सिद्धों के गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
मोक्ष महल हम जाएँगे, लौट के फिर न आएँगे।। 6।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मरहित अनन्तदर्शन गुण सहित श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः/चरणारविन्दाय/नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

परम सिद्ध की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
सिद्ध शिला अभिरामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।
उच्च नीच दो गोत्र कर्म के, भेद बताए हैं।
बार-बार कर्मों के फल से, प्राणी पाए हैं।।
पर की निंदा आत्म प्रशंसा, कारी जो गाए।
पर के सद्गुण ढाके निज के, गुण जो बतलाए।।
नीच गोत्र इस वृत्ती वाले, पाते हैं भाई।
इसके जो विपरीत स्वयं में, लघुता जो पाई।।
उच्च गोत्र को प्राणी जग में, पाने वाले हैं।
अगुरुलघु गुण पाने वाले, सिद्ध निराले हैं।।
सिद्धों के गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
मोक्ष महल हम जाऐंगे, लौट के फिर न आऐंगे।। 7।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मरहित अनन्तदर्शन गुण सहित श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः/चरणारविन्दाय/नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं /निर्वपामीति स्वाहा।

परम सिद्ध की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
सिद्ध शिला अभिरामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।
कर्म अन्तराय विघ्न डालने, वाला है भाई।
इसकी माया नहीं किसी ने, कभी जान पाई।।
दान लाभ भोगोपभोग व, वीर्यान्तराय पाये।
पंच भेद अन्तराय कर्म के, आगम में गाये।।
अन्तराय कर्मों से जग के, जीव दुखारी हैं।
अन्तराय का क्षय करते जो, संयम धारी हैं।।
वीर्यानन्त को पाने वाले, अर्हत् सिद्ध गाए।
विशद भाव से जिनके चरणों, यह जग सिरनाए।।
सिद्धों के गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
मोक्ष महल हम जाऐंगे, लौट के फिर न आऐंगे।। 8।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मरहित अनन्तदर्शन गुण सहित श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः/चरणारविन्दाय/नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

परम सिद्ध की जय बोलो, जयकारा से मुँह खोलो।
सिद्ध शिला अभिरामी की, जय हो अन्तर्यामी की।।
ज्ञानावरणी कर्म ज्ञान का, बाधाकारी है।
कर्म दर्शनावर्णी दर्शन, का परिहारी है।।
वेदनीय से सुख दुख वेदन, होता है भाई ।
मोहनीय मोहित करता हैं, जग में दुखदायी।।
आयु कर्म चारों गतियों में, भ्रमण कराता है।
नाम कर्म नाना प्रकार के, रूप बनाता है।।
उच्च नीच हो गोत्र कर्म से, अन्तराय भाई।
विघ्न करें, कर्मों के क्षय से, सिद्ध दशा पाई।।
सिद्धों के गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
मोक्ष महल हम जाऐंगे, लौट के फिर न आऐंगे।। ९।।

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म रहित अष्ट गुण सहित श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः/चरणारविन्दाय/नैवेद्यं/दीपं/धूपं/फलं/जलादि पूर्णार्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

(नोट-सिद्धाराधना करने वाले सिद्धों के आठ गुणों की नैवेद्य दीप/धूप/अर्घ्य आदि) जो भी द्रव्य चढ़ाते हैं मन्त्र में केवल उसी द्रव्य का मन्त्र बोलकर अर्चा करें।

मानवता का पाना कोई साधारण नहीं है,
महत्त्वपूर्ण आचरण है उच्चारण नहीं है।
तीन लोक को विजय प्राप्त किया प्रभु ने,
इसलिए जिन कहा कोई अकारण नहीं है।।

नव देवता स्तुति-जिनार्चना

(हे स्वामी! नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।)

दोहा - पूज्य रहे नवदेवता, नव कोटी के साथ।
महिमा जिनकी गा रहे, झुका चरण में माथ।।

(विष्णु पद छन्द)

सोलह कारण भव्य भावना, भव्य जीव भाते।
तीर्थंकर प्रकृति के बंधक, पुण्य से हो जाते।।
गर्भ कल्याणक स्वर्ग से आकर, देव मनाते हैं।
पाण्डुक शिला पे जन्मोत्सव पर, न्हवन कराते हैं।।
पाकर के कोई निमित्त जो, संयम अपनाते।
निज आतम के ध्यानी होकर, विशद ज्ञान पाते।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, मोक्ष महल जाते।
अर्हन्तों के चरणों में हम, भाव से सिर नाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंतदेवाय नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दर्शनावर्णी क्षयते, ज्ञान दर्श आएँ।
वेदनीय के क्षय होते ही, अव्याबाध पाएँ।
मोहनीय के क्षय से भाई, सुखानन्त जानो।।
आयु कर्म का क्षय होते ही, अवगाहन मानो।
नाम कर्म क्षयते ही प्राणी, गुण सूक्ष्मत्व पाएँ।
गोत्र कर्म का क्षय होते ही, अगुरुलघु आएँ।।
कर्मान्तराय के क्षय होते शुभ, वीर्यानन्त पाएँ।
परम पूज्य सिद्धों के चरणों, भाव से सिरनाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धदेवाय नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार का पालन करते, त्रय गुप्ती कारी।
दश धर्मों के धारी गुरुवर, होते अविकारी।।
बाह्याभ्यन्तर तप जो गाये, गुरुवर तपते हैं।
महामन्त्र का जाप भाव से, नित प्रति जपते हैं।।
षड् आवश्यक पालन करते, त्रय गुप्ती धारी।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, गुरुवर अविकारी।।
पंच महाव्रत समिति के धारी, इन्द्रिय जयकारी।
सप्त शेष गुण पाने वाले, पावन अनगारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपरमेष्ठिने नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

आचारांग आदि एकादश, कहे अंगधारी।
चौदह पूर्वों के धारी होते, पावन अविकारी।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण को, पाने वाले हैं।
मोक्षमार्ग के नेता अनुपम, संत निराले हैं।।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, निज को ध्याते हैं।
मुनियों को शिक्षा देकर जो, ज्ञान जगाते हैं।।
उपाध्याय बहुश्रुत के धारी, पूज्य कहे जाते
तीन योग से जिनके चरणों, हम सब सिरनाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

परम अहिंसा सत्य महाव्रत, व्रताचौर्य पाते।
ब्रह्मचर्यव्रत अपरिग्रही मुनि, पावन कहलाते।।
ईर्या भाषा और ऐषणा, कहे समितिकारी।
आदान निक्षेपण व्युत्सर्गी, होते अनगारी।।
समता वन्दना प्रतिक्रमण जो, स्तव स्वाध्यायी।
कायोत्सर्ग अचेलकधारी, भूमि शयनकारी।।

केशलुंज इक भुक्तीकारी, अस्नान धारी।
अदन्त धावन स्थिति भोजी, मुनिवर अनगारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिने नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु स्वभाव धर्म है पावन, कहती जिनवाणी।
परम अहिंसा धर्म कहा है, जग जन कल्याणी।।

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्यकारी।
संयम तपस्त्याग आकिंचन, ब्रह्मचर्य धारी।।
शंसय विभ्रम मोह के त्यागी, हों सम्यग्ज्ञानी।
भेद ज्ञान प्रगटाने वाले, होवें श्रद्धानी।।

पंच महाव्रत समिति गुप्ति त्रय, सच्चारित भाई।
तीन लोक में धर्म पूज्य है, पावन सुखदायी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जिनधर्मांगाय नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र की वाणी पावन, गणधर ने पाई।
जो सर्वांग से खिरी प्रभु के, पावन अतिशायी।।

ॐकारमय दिव्य देशना, जग जन हितकारी।
स्याद्वाद मय तीन लोक में, है मंगलकारी।।
द्वादशांग जिनवाणी पावन, दोष रहित गाई।
सब भाषामय रही अलौकिक, अनुपम शिवदाई।।

मधुर रही गम्भीर मनोहर, जग रक्षाकारी।
सकल तत्त्व दर्शाने वाली, विशद सौख्यकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनआगमाय नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध ध्यानमय प्रातिहार्य युत, जिन प्रतिमा गाई।
परमेष्ठी कृत शांत स्वरूपी, शुभ मंगलदायी।।

सर्व विकार भाव से वर्जित, पावन अविकारी।
सुभग-चैतन्य भावमय अनुपम, शुभ अतिशयकारी।।

स्वात्मानन्द प्रशान्त वंदन मय, जिन मुद्रा सोहे।
कृत्रिमा-कृत्रिम श्री जिनप्रतिमा, जग जन मन मोहे।।

शांतीदायक पुण्य प्रदायक, है शिव पद दायी।
सुरनर मुनि से पूजित प्रतिमा, पूज रहे भाई।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जिन चैत्यालय नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

घण्टा तोरणादि से सज्जित, धूप घटों वाले।
सुरनर देवेन्द्रों से अर्चित, शुभ महिमा वाले।।

वीतरागमय जिन प्रतिमा से, संयुत शुभकारी।
भवि जीवों के मन मधुकर को, है रंजनकारी।।

पूजारम्भ महोत्सव मंगल, हों मंगलकारी।
महत पुण्य कारक सत किरिया, होवे हितकारी।।

कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यालय, जग जन मनहारी
'विशद' भाव से पूजित अनुपम, है विस्मयकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जिन चैत्यालयाय नमः चरणाभ्यां दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

पूज्य रहे नव देवता, जग के तारण हार।
विशद भाव से पूजते, नत हो बारम्बार।।

।। सप्त तत्त्व भावना ।।

दोहा

सप्त तत्त्व में धारते, जो सम्यक् श्रद्धान।
सम्यक्त्वी वे जीव हों, पावें शिव सोपान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(विष्णुपद छन्द)

तत्त्वों का हों श्रद्धानी, कहलाए सम्यग्ज्ञानी।
तत्त्व भावना भाना है, भेद ज्ञान प्रगटाना है।।

जीव रहा चेतन स्वरूपी, दर्श ज्ञान पाए।
है उपयोग जीव का लक्षण, आगम बतलाए।।
चक्षु अचक्षु अवधि दर्श अरु, केवल कहलाए।
मति श्रुत अवधि मनः पर्यय शुभ, विशद ज्ञान पाए।।
मति श्रुत अवधि विपर्यय होते, जो अज्ञान कहे।
संसारी व मुक्त जीव ये, जीव के भेद रहे।।
त्रस स्थावर सैनी असैनी, संसारी गाए।
अष्ट कर्म से मुक्त सिद्ध पद, हम सब सिर नाए।।

सप्त तत्त्व में श्रद्धा धरके, शिव पद अपनाएँ।
अपने सारे कर्म नाशकर, विशद मोक्ष पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व प्ररूपक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों का हो श्रद्धानी, कहलाए सम्यग्ज्ञानी।
तत्त्व भावना भाना है, भेद ज्ञान प्रगटाना है।।

धर्मा-धर्माकाश काल व, पुदगल भी जानो।
तत्त्व अजीव में द्रव्य ये पाँचों, आती हैं मानो।।

धर्म द्रव्य सहकारी साधन, चलने में गाया।
द्रव्य अधर्म ठहरने हेतू, साधन बतलाया।।
सब द्रव्यों को अवगाहन दे, वह आकाश कहा।
काल द्रव्य परिणमन कराने, वाला श्रेष्ठ रहा।
है स्पर्श गंध रस वर्णी, पुद्गल कहलाए।
मूर्तिमान ये अन्य अमूर्तिक, द्रव्य सभी गाए।।

सप्त तत्त्व में श्रद्धा धरके, शिव पद अपनाएँ।
अपने सारे कर्म नाशकर, विशद मोक्ष पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अजीव तत्त्व प्ररूपक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्वों का हो श्रद्धानी, कहलाए सम्यग्ज्ञानी।
तत्त्व भावना भाना है, भेद ज्ञान प्रगटाना है।।

हलन चलन हो आत्म प्रदेशों, में योगों द्वारा।
अष्ट कर्म का आस्त्रव होवे, सारा का सारा।।
मिथ्या पंच कषाऐं पच्चिस, पन्द्रह योग कहे।
इन्द्रिय एवं प्राणी अविरति, द्वादश भेद रहे।।
नाले में ज्यों पानी बहकर, आता है भाई।
कर्मों का आस्रव त्यों होवे, जिय को दुखदायी।।
पुण्य पाप दो भेद रूप हो, सुख दुख का दाता।
चेतन से कर्मो का बन्धन, जिससे हो जाता।।

सप्त तत्व में श्रद्धा धरके, शिव पद अपनाएँ।
अपने सारे कर्म नाशकर, विशद मोक्ष पाएँ।।।3।।

ॐ ह्रीं आस्रव तत्त्व प्ररूपक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/ अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्वों का हो श्रद्धानी, कहलाए सम्यग्ज्ञानी।
तत्व भावना भाना है, भेद ज्ञान प्रगटाना है।।

मिथ्या अविरति योग कषाएँ, हो प्रमाद भाई।
बन्ध के हेतु पंच कहे यह, अतिशय दुखदायी।।
हो कषाय से युक्त जीव तो, कर्म योग जानो।
पुद्गल के परमाणु बँधते, जीवों को मानो।।
प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश चउ, बंध के भेद रहे।
हो प्रदेश अनुभव कषाय से, योग से अन्य कहे।।
क्षीर नीर ज्यों संस्लेश हों, फिर भी भिन्न रहें।
कर्म बन्ध त्यों हो जीवों को, श्री जिनदेव कहे।।

सप्त तत्त्व में श्रद्धा धरके, शिव पद अपनाएँ।
अपने सारे कर्म नाशकर, विशद मोक्ष पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व प्ररूपक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्वों का हो श्रद्धानी, कहलाए सम्यग्ज्ञानी।
तत्त्व भावना भाना है, भेद ज्ञान प्रगटाना है।।

कर्मास्रव का रोध जीव के, संवर कहलाए।
पंच महाव्रत समिति पंच त्रय, गुप्ती कर पाए।।
दश धर्मों के धारी ऋषिवर, परिषह जयकारी।
अनुप्रेक्षा के चिंतन कारी, सच्चारित धारी।।
तप से संवर होय निर्जरा, जिनवाणी गाए।
कर्मों का आस्त्रव रुकते ही, बन्ध न हो पाए।।
भव में भ्रमण के हेतू आस्त्रव, बन्ध तत्त्व जानो।
संवर और निर्जरा हेतू, मोक्ष के हैं मानो।।

सप्त तत्व में श्रद्धा धरके, शिव पद अपनाएँ।
अपने सारे कर्म नाशकर, विशद मोक्ष पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं संवर तत्त्व प्ररूपक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों का हो श्रद्धानी, कहलाए सम्यग्ज्ञानी।
तत्त्व भावना भाना है, भेद ज्ञान प्रगटाना है।।

बाह्य सुतप अनशन ऊनोदर, व्रत संख्याकारी।
रस परित्याग विविक्त शैय्यासन, कायक्लेश धारी।।
प्रायश्चित विनय वैय्यावृत्ती तप, स्वाध्याय जानो।
कायोत्सर्ग ध्यान अभ्यन्तर, तप गाये मानो।।
उदय योग सविपाक निर्जरा, होती है भाई।
संवर तप से होय निर्जरा, है जो शिवदायी।।
ज्यों सागर का नीर ताप से, शीघ्र सूख जाए
तप से कर्मों का क्षय क्षण-क्षण, जीव स्वयं पाए।।

सप्त तत्त्व में श्रद्धा धरके, शिव पद अपनाएँ।
अपने सारे कर्म नाशकर, विशद मोक्ष पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं निर्जरा तत्त्व प्ररूपक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों का हो श्रद्धानी, कहलाए सम्यग्ज्ञानी।
तत्त्व भावना भाना है, भेद ज्ञान प्रगटाना है।।

ज्ञानदर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय गाए।
कर्म घातिया क्षय से केवल, ज्ञान जाग जाए।।
कर्म बन्ध के हेतु नशते कर्मों का क्षय हो
मोक्ष प्राप्त करते हैं ज्ञानी, जिनकी जय जय हो।।

आयु वेदनीय नाम गोत्र चउ, क्षय होते भाई
मोक्ष महापद पाके मानव, पाए प्रभुताई।।
ज्ञान शरीरी कर्मों विरहित, मोक्ष तत्त्व पाएँ।
विशद भाव से सिद्धों के पद, हम सब शिरनाएँ।।

सप्त तत्त्व में श्रद्धा धरके, शिव पद अपनाएँ।
अपने सारे कर्म नाशकर, विशद मोक्ष पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व प्ररूपक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्वों का हो श्रद्धानी, कहलाए सम्यग्ज्ञानी।
तत्त्व भावना भाना है, भेद ज्ञान प्रगटाना है।।

जीव तत्त्व जीवत्व भाव का, धारी कहलाए।
तत्व अजीव चेतना गुण को, कभी नहीं पाए।।
आस्रव तत्त्व शुभाशुभ कर्मों, को बतलाता है।
बन्ध तत्त्व में जीव कर्म का, बन्धन पाता है।।
संवर तत्त्व से जीव कर्म का, आस्रव न पाए
तत्त्व निर्जरा से कर्मों का, क्षय होता जाए।
अष्ट कर्म का क्षय होते ही, शिव पद अपनाएँ।
'विशद' भावना मोक्ष तत्व को, पाने की भाएँ ।।

सप्त तत्त्व में श्रद्धा धरके, शिव पद अपनाएँ।
अपने सारे कर्म नाशकर, विशद मोक्ष पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं सप्त तत्त्व प्ररूपक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा

दोहा - सप्त तत्त्व जो 'विशद' करते है श्रद्धान।
रत्नत्रय को धारकर, पाते पर निर्वाण ।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

।। षड् आवश्यक भावना ।।

दोहा

सद् श्रावक छह पालते, आवश्यक कर्तव्य।
राही बनते मोक्ष के, होते हैं जो भव्य।।

(विष्णुपद छन्द)

षड आवश्यक का धारी, श्रावक स्व पर उपकारी।
निज कर्त्तव्य निभाता है, अतिशय पुण्य कमाता है।।

कर्म घातिया का क्षय होते, केवल ज्ञान जगे,
अर्हन्तों के गुण चिन्तन में, मेरा चित्त लगे।।
सिद्ध परम पद पाने वाले, हैं शिवपुर वासी।
नित्य निरंजन ज्ञान शरीरी, होते अविनाशी।
अर्हत् सिद्ध पूज्य इस जग में, देव कहे जाते।
सुर नर मुनि गणधर भी जिनके, चरणों सिरनाते।
श्रावक के कर्त्तव्य प्रथम में, जिन पूजा आए।
जिन पूजा करने में मेरा, चित्त हर्ष पाए।।

षड् आवश्यक पालन करके, निज कर्त्तव्य निभाएँगे।
परम्परा से संयमधारी, होकर शिवपुर जाएँगे।।1।।

ॐ ह्रीं देव पूजा आवश्यक गुण सदोपदेश धारक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

षड आवश्यक का धारी, श्रावक स्व पर उपकारी।
निज कर्त्तव्य निभाता है, अतिशय पुण्य कमाता है।।

विषयाशा आरम्भ परिग्रह, के जो परिहारी।
ज्ञान ध्यान तप लीन मुनीश्वर, पावन अविकारी।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु जी, शिवपथ दिखलाते।
परम पूज्य परमेष्ठी पद में, आप सभी आते।।

श्रावक सप्त गुणों के धारी, नवधा भक्ति करें।
गुरु उपासना करके श्रावक, अपने कर्म हरें।।
विशद भक्ति करके श्रावक के, हर्ष हृदय छाए।
गुरु भक्ती करने में मेरा, चित्त हर्ष पाए।।

षड् आवश्यक पालन करके, निज कर्त्तव्य निभाएंगे।
परम्परा से संयमधारी, होकर शिवपुर जाएंगे।।2।।

ॐ ह्रीं गुरु उपासना आवश्यक गुण सदोपदेश धारक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिनेन्द्र की वाणी पावन, जिनवाणी गाई।
तीन लोक में हितकारी जो, जीवों को भाई।।

भव्य जीव जिनवाणी पढ़के, ज्ञान जगाते हैं।
कार्य हिताहित के फिर प्राणी, नित कर पाते हैं।
प्रथम वाचना स्वाध्याय कर, प्रच्छा फिर करते।
अनुप्रेक्षा आम्नाय प्राप्त कर, धर्मोपदेश पाते
पाँच भेद ये स्वाध्याय के, जिनवर ने गाए।
स्वाध्याय कर विशद शास्त्र का, हर्ष हृदय पाए।।

षड् आवश्यक पालन करके, निज कर्त्तव्य निभाएंगे।
परम्परा से संयमधारी, होकर शिवपुर जाएंगे।।3।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय आवश्यक गुण सदोपदेश धारक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

षड् आवश्यक का धारी, श्रावक स्व पर उपकारी।
निज कर्त्तव्य निभाता है, अतिशय पुण्य कमाता है।।

पृथ्वी जल अग्नी वायू व, वनस्पती जानो।
विकलेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय त्रस, जीव सभी मानो।।
इनकी रक्षा करना प्राणी, संयम कहलाए।
पंचेन्द्रिय मन को वश करना, अपर कहा जाए।।

भव्य जीव संयम धारण कर, पुण्योदय पाते।
काल अनादी लगे कर्म जो, उनके क्षय जाते।।
छोड़ असंयम संयम धारी, जो भी हो जाएँ।
इस भव में सुख शांती पाके, पर भव शिव पाएँ।।

षड् आवश्यक पालन करके, निज कर्त्तव्य निभाएंगे।
परम्परा से संयमधारी, होकर शिवपुर जाएंगे।।4।।

ॐ ह्रीं संयम आवश्यक गुण सदोपदेश धारक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

षड आवश्यक का धारी, श्रावक स्व पर उपकारी।
निज कर्त्तव्य निभाता है, अतिशय पुण्य कमाता है।।

संयम तप के भेद कहे दो, कर्म के क्षय कारी।
बाह्य सुतप छह भेदों वाला, जग जन उपकारी।।
अनशन ऊनोदर व्रत संख्या, विविक्त शैय्या गाए।
काय क्लेश तप किए निर्जरा, कर्मों की पाए।।
प्रायश्चित विनय वैय्यावृत्ती तप, स्वाध्याय जानो।
कायोत्सर्ग ध्यान तप भाई, अभ्यन्तर मानो।।
तप से संवर कर्म निर्जरा, जीव करें भारी।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, अतिशय उपकारी।।

षड् आवश्यक पालन करके, निज कर्त्तव्य निभाएंगे।
परम्परा से संयमधारी, होकर शिवपुर जाएंगे।।5।।

ॐ ह्रीं तप आवश्यक गुण सदोपदेश धारक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

षड आवश्यक का धारी, श्रावक स्व पर उपकारी।
निज कर्त्तव्य निभाता है, अतिशय पुण्य कमाता है।।

स्व-पर के उपकार हेतु जो, द्रव्य दिया जाए।
दान श्रेष्ठ जो पुण्य प्रदायी, अनुपम कहलाए।।

नवधा भक्ती पूर्वक श्रावक, सप्त गुणों धारी।
देते हैं आहार दान जो, जग जन उपकारी।।
रोगी साधू वृतियों को जो, औषधि दी जाए।
औषधि दान जगत उपकारी, पावन कहलाए।।
ज्ञान के हेतू शास्त्र अभय शुभ, भवन दिया जाए।
विशद दान का भाव हृदय में, सदा सदा आए ।।

षड् आवश्यक पालन करके, निज कर्त्तव्य निभाऐंगे।
परम्परा से संयमधारी, होकर शिवपुर जाऐंगे।।6।।

ॐ ह्रीं दान आवश्यक गुण सदोपदेश धारक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/अर्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

षड आवश्यक का धारी, श्रावक स्व पर उपकारी।
निज कर्त्तव्य निभाता है, अतिशय पुण्य कमाता है।।

श्रावक के कर्त्तव्य कहे छह, पालें श्रद्धानी।
निज पर के उपकारी होते, श्रावक सद् ज्ञानी।।
पूज्य पुरुष के गुण गाना यह, भक्ती कहलाए।
भक्ती मुक्ती का साधन हैं, जो भी अपनाए।।
गुरु भक्ती की गंगा में जो, अवगाहन करते।
स्वाध्याय संयम तप धर के, भावों से भरते।।
दान करें स्व पर उपकारी, जिन पद शिरनाएँ।
'विशद' भाव आवश्यक पालन, के हम अपनाएँ ।।

षड् आवश्यक पालन करके, निज कर्त्तव्य निभाऐंगे।
परम्परा से संयमधारी, होकर शिवपुर जाऐंगे।।7।।

ॐ ह्रीं श्रावक षड् आवश्यक गुण सदोपदेश धारक श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं/धूपं/फलं/पूर्णार्घ्यं/ निर्वपामीति स्वाहा ।

।। गुरुवर की स्तुति ।।

तर्ज – तुमसे लागी लगन .....

दर्श गुरु का मिले, मन की बगिया खिले, गुरु हमारे।
गुरु हैं नभ में चमकते सितारे।।टेक।।

विषय आशा के त्यागी कहाए, परिग्रह आरम्भ कुछ भी न पाए।
गुरु ज्ञानी रहे, परं ध्यानी कहे, संयम धारे।।
गुरु हैं नभ में चमकते सितारे।।1।।

पंच महाव्रत के धारी कहाते, पंच समिति में भी मन को लगाते।
पंच इन्द्रिय जयी, राह पाएँ नई, मुनि हमारे।।
गुरु हैं नभ में चमकते सितारे।।2।।

समता वन्दन हैं स्वाध्याय धारी, स्तुति कायोत्सर्ग प्रतिक्रमणकारि।
आवश्यक छह ये रहे, पूज्य मुनि के कहे, पालें सारे।।
गुरु हैं नभ में चमकते सितारे।।3।।

क्षिति शयन केशलुंच अचेलक्य गाए, अदन्त धावन एक भुक्ती जो पाए।
स्थिर भोजी रहे, अस्नानकारी कहे, गुण ये धारे।।
गुरु हैं नभ में चमकते सितारे।।4।।

मुक्ती के राही ये गुरुवर कहाते, कर्म अपने जो सारे नशाते।
'विशद' शिव पथ चले, लगे कर्म गले, जिनके सारे।।
गुरु हैं नभ में चमकते सितारे।।5।।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभयोः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥ गुरु....1॥

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥ गुरु....2॥

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।गुरु...3॥

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥ गुरु....4॥